Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 44

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

2 रबीउल अव्वल 1441 हिजरी कमरी 31 इख़ा 1398 हिजरी शमसी 31 अक्तूबर 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

अख़लाक़ की करामत में बहुत असर होता है। फिलासफर लोग मआरिफ़ और हक़ायक़ से तसल्ली नहीं पा सकते।
आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान अख़लाक़ ऐसे थे कि اِنَّکَ لَعَلٰی خُلُقٍ عَظِیۡمٍ (अल-क़लम:5) क़ुरआन में आया है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

बदज़नी

बदज़नी एक ऐसा बीमारी है और ऐसी बुरी बला है जो इन्सान को अंधा कर के हलाकत के अन्धे कुँएं में गिरा देती है। बदज़नी ही है जिसने एक मुर्दा इन्सान की पूजा कराई। बदज़नी ही तो है जो लोगों को ख़ुदा तआला की सिफ़तें ख़लक़, रहम, राज़कियत इत्यादि से मुअत्तल कर के नऊज़ बिल्लाह एक फ़र्द मुअत्तल और बेकार चीज़ बना देती है। अत: इसी बदज़नी के कारण जहन्नुम का बहुत बड़ा हिस्सा अगर कहूं कि सारा हिस्सा भर जाएगा तो अतिश्योक्ति नहीं। जो लोग अल्लाह तआला के मामूरों से बदज़नी करते हैं वे ख़ुदा तआला की नेअमतों और इस के फ़ज़ल को हीनता की नज़र से देखते हैं। अत: अगर कोई हमारे इस सिलसिला का जो ख़ुदा तआला ने अपने हाथ से क़ायम किया इनकार करे तो हमको अफ़सोस होता है कि हाय! एक रूह हलाकत के दरवाज़ा की ज़ंजीर खटखटाती है और यह सिलसिला ऐसा प्रकाशित है कि अगर कोई आदमी तैय्यार दिल लेकर दो घंटा भी हमारी बातों को सुने तो वह हक़ को पा लेगा।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अख़लाक़ के चमत्कार

अब मैं चाहता हूँ कि कुछ बातें और कह कर इस तक़रीर को ख़त्म कर दूं। मैं थोड़ी देर के लिए चमत्कार के सिलसिला की तरफ़ फिर लौट कर के कहता हूँ कि एक चमत्कार तो चांद का दो टुकड़े होने के इल्मी रंग के हैं और दूसरे हक़ायक़ तथा मआरिफ़ के। तीसरा वर्ग चमत्कार का अख़लाक़ का चमत्कार हैं। अख़लाक़ की करामत में बहुत असर होता है। फिलासफर लोग मआरिफ़ और हक़ायक़ से तसल्ली नहीं पा सकते। मगर महान अख़लाक़ उन पर बहुत बड़ा और गहरा असर करते हैं। हुज़ूर सय्यदुल मुरसलीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अख़लाक़ के चमत्कार में से एक यह भी है कि एक बार आप एक दरख़्त के नीचे सोए पड़े थे कि अचानक एक शोर तथा पुकार से उठ गए तो क्या देखते हैं कि जंगली देहाती तलवार खींच कर ख़ुद हुज़ूर पर आ पड़ा है। उसने कहा। हे मुहम्मद ! (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) बता इस वक़्त मेरे हाथ से तुझे कौन बचा सकता है ? आप ने पूरे इतमीनान और सच्चे सन्तोष से जो हासिल थी फ़रमाया कि अल्लाह। आप का यह फ़रमाना साधारण इन्सानों की तरह ना था। अल्लाह जो ख़ुदा तआला का एक व्यक्तिगत नाम है और जो सारी सिफतों का पूण सार का है। ऐसे तौर पर आपके मुँह से निकला कि दिल से निकला और दिल पर ही जा कर ठहरा। कहते हैं कि सब से बड़ा नाम यही है और इस में बड़ी बड़ी बरकतें हैं लेकिन जिसको वो अल्लाह याद ही ना हो वह इस से क्या फ़ायदा उठाएगा। अत: ऐसे तौर पर अल्लाह का शब्द आप के मुँह से निकला कि इस पर रौब छा गया और हाथ काँप गया। तलवार गिर पड़ी। हज़रत ने वही तलवार उठा कर कहा कि अब बतला। मेरे हाथ से तुझे कौन बचा सकता है? वह कमज़ोर दिल जंगली किस का नाम ले सकता था। आख़िर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने उच्च अख़लाक़ का नमूना दिखाया और कहा जा तुझे छोड़ दिया और कहा कि उपकार और बहादुरी मुझ से सीख। इस अख़लाक़ी मोजिज़ा ने इस पर ऐसा असर किया कि वह मुसलमान हो गया।

सैयर में लिखा है कि अबुल-हसन ख़रक़ानी के पास एक आदमी आया। रास्ता में शेर मिला और कहा कि अल्लाह के लिए पीछा छोड़ दे। शेर ने हमला किया और जब कहा। अबुलहसन के लिए छोड़ दे तो उसने छोड़ दिया। ऊपर वर्णित आदमी के ईमान में इस हालत ने अन्धेरा सा पैदा कर दिया और उसने सफ़र छोड़ दिया। वापस आकर यह परेशानी पेश की। इस को अबुलहसन ने जवाब दिया कि यह बात मुश्किल नहीं। अल्लाह के नाम से तू वाक़िफ़ ना था। अल्लाह की सच्ची हैबत और प्रताप तेरे दिल में ना था और मुझ से तू परिचित था। इसलिए मेरी क़दर तेरे दिल में थी। अत: अल्लाह के शब्द में बड़ी बड़ी बरकतें और ख़ूबियां हैं शर्त यह है कि कोई उस को अपने दिल में जगह दे और इस की आवाज़ पर कान धरे।

इसी तरीका पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अख़लाक़ी चमत्कार में एक अन्य मोजिज़ा भी है कि आप के पास एक वक़्त बहुत सी भेड़ें थीं। एक आदमी ने कहा इस क़दर माल इस से पहले किसी के पास नहीं देखा। हज़ूर ने वे सब भेड़ें उस को दे दीं। उसने शीघ्र कहा कि निसन्देह आप सच्चे नबी हैं। सच्चे नबी के बिना इस किस्म की सख़ावत दूसरे से अमल में आनी मुश्किल है। अत: आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान अख़लाक़ ऐसे थे कि

اِنَّکَ لَعَلٰی خُلُقٍ عَظِیۡمٍ (अल-क़लम:5) क़ुरआन में आया है।

हमारी जमाअत को उचित है कि वह अख़लाक़ की तरक़्क़ी करें

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 85 से 87)

☆ ☆ ☆

जलसा सालाना कादियान के बारे में एलान

दिसम्बर 2019 ई में आयोजित होने वाले जलसा सालाना कादियान के बारे में अख़बार बदर कादियान में ऐलान होता रहा है कि यह जलसा 125वां जलसा सालाना है। इस तारीख़ी जलसा के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कुछ विशेष प्रोग्रामों की मन्ज़ूरी प्रदान फ़रमाई है जिस की सूचना सर्कुलर के द्वारा जमाअतों को दी गई है। इसी दौरान' तारीख़ अहमदियत कादियान विभाग''की तहक़ीक़ की रोशनी में सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल की सेवा में यह सूचना दी गई कि 2019 ई में आयोजित होने वाला जलसा सालाना 125 वां जलसा सालाना नहीं बल्कि126 वां जलसा सालाना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शफ़क़त करते हुए इस की मन्ज़ूरी प्रदान फ़रमाई और प्रोग्रामों को भी जारी रखने का आदेश फ़रमाया है। बदर के पाठक सूचित रहें।

(नाज़िर इस्लाहो इरशाद मर्कज़िया कादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर, अक्तूबर 2018 ई (भाग-13)

नेशनल आमिला मजलिस अन्सारुल्लाह यू.एस. ए की सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाक़ात,वाक़फ़ात नौ क्लास, वाक़फ़ीन नौ की क्लास,यू.ऐस कांग्रस मैन की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

नेशनल आमिला मजलिस अन्सारुल्लाह यू.एस. ए की सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाक़ात

क़ायद तरबीयत ने निवेदन किया कि हम ने ख़ुत्बा जुम्अ: के बारे में अंदाज़ा लगाया था कि कितने अन्सार हैं जो हर महीने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का कम से अज़ कम एक ख़ुत्बा सुनते हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आप सिर्फ एक ख़ुत्बा पर क्यों ध्यान दे रहे हैं? सारे ख़ुत्बों पर क्यों नहीं दे रहे? सौ प्रतिशत अन्सार ख़ुत्बा सुनें और हर ख़ुत्बा सुनें। आप का टार्गेट यह होना चाहिए कि हर नासिर नियमित हर हफ़्ता ख़ुत्बा सुने।

इस पर सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह ने निवेदन किया कि हम सिर्फ इस बात का अंदाज़ा लगा रहे थे कि कितने अन्सार हैं जो कम से कम एक ख़ुत्बा सुन कर उस को अपने घर वालों के साथ डिस्कस करते हैं। हमारा मक़सद था कि लोग ख़ुत्बा जुम्अ: को अपनी रोज़मर्रा ज़िन्दगी का हिस्सा बना लें और ख़ुत्बा को नियमित अपनी फ़ैमिली में डिस्कस क्या करें।

क़ायद तर्बीयत ने वसीयत के बारे में से बताया कि हमने दरमयानी मज्लिसों को तीन मेम्बरों की वसीयत और बड़ी मज्लिसों को पाँच मेम्बरों की वसीयत का टार्गेट दिया हुआ है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई कि ऐसे अन्सार जिन की आयु 65 साल से ज़्यादा हो चुकी हैं उन्हें वसीयत के बारे में ना कहीं। लोगों को चाहिए कि वह अपनी उम्र के पहले हिस्सों में निज़ाम वसीयत में शामिल हों।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई कि नमाज़ बाजमाअत के स्थापना की तरफ़ विशेष ध्यान दें। अन्सार को क़ुरआन करीम की आयतों, हदीसों , हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और खलीफ़ा के उद्धरण के द्वारा पांच वक्त नमाज़ के अदा करने की तरफ ध्यान दिलाए। यह उद्धरण हर नासिर तक पहुँचें और वे उन्हें पढ़ें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि नेशनल स्तर पर और स्थानीय सतह पर इस बात को यक़ीनी बनाएँ कि मज्लिस आमला का हर मैंबर नियमित पांचों समय नमाज़ की अदायगी करता हो जिन में से कम से कम तीन नमाज़ें जमाअत के साथ हूँ खासतौर पर फ़ज्र , मग़रिब और इशा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मैंने मजलिस अन्सारुल्लाह यू.के के इज्तिमा के अवसर पर जो ख़िताब किया था उसे सुनें और इस का अंग्रेज़ी अनुवाद करके हर अन्सार मैंबर तक पहुंचाएं।

*हुज़ूर अनवर के पूछने फ़रमाने पर क़ायद तर्बीयत नौ मुबाईन ने निवेदन किया कि पिछले तीन सालों के 45 नौ मुबाईन हैं। हम उन्हें फ्री इस्लामिक ऑनलाइन कोर्स और why ahmadi.org की वेबसाइट प्रयोग करने की तरफ़ ध्यान दिलाते हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि नौ मुबाईन को नमाज़ आनी चाहिए , उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावों और उद्देश्यों का इल्म होना चाहिए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर क़ायद तर्बीयत नौ मुबाईन ने निवेदन किया कि इस साल के जो 11 नौ मुबाईन हैं उन से भी हमारा नियमित सम्पर्क है।

*क़ायद तब्लीग़ ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए निवेदन किया कि उनके इस साल का यह लक्ष्य थे कि अन्सार हुज़ूर अनवर का ख़ुत्बा बाक़ायदगी से सुनें , तब्लीग़ में हिस्सा लें, ग्रुप तब्लीग़ activity करें और जलसा के अवसर पर मेहमानों को लेकर आएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने फ़रमाने पर क़ायद तब्लीग़ ने निवेदन किया कि उनके कुल 165 दाईयान इलल्लाह हैं और इस साल अन्सारुल्लाह के द्वारा 11 बैअतें हुई हैं।

*क़ायद तहरीक जदीद ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर निवेदन किया कि इस साल तहरीक जदीद में 1632 अन्सार अभी तक हिस्सा ले चुके हैं और हमारा लक्ष्य है कि कम से कम नव्वे प्रतिशत अन्सार तहरीक में हिस्सा लें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने फ़रमाने पर क़ायद तब्लीग़ ने निवेदन किया कि हम मेम्बर मज्लिस को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के ख़ुत्बों में से उद्धरण और बुज़ुर्गान की घटनाओं के द्वारा तहरीक करते हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अन्सारुल्लाह को तहरीक जदीद में शामिल होने की तरग़ीब दिलाने के लिए और उन्हें motivate करने के लिए विभिन्न तरीक़े तलाश करने होंगे और कोशिश करें कि वे हर महीने तहरीक जदीद का चन्दा अदा करें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अगर आप सारी मज्लिसों में अपने नाज़िमीन को activate करें तो आप अपना टार्गेट प्राप्त कर सकते हैं।

* हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर क़ायद साहिब वक़्फ़ जदीद ने निवेदन किया कि पिछले साल 2435 अन्सार ने वक़्फ़ जदीद में शमूलीयत की थी और इस साल अभी तक 1600 अन्सार शामिल हो चुके हैं और अदायगी कर चुके हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अभी तक आपका पच्चास प्रतिशत भी नहीं हुआ। इस पर क़ायद साहिब वक़्फ़ जदीद ने निवेदन किया कि प्राय: लोग आख़री दो महीनों में अदायगी करते हैं इसलिए इंशा अल्लाह संख्या में इज़ाफ़ा हो जाएगा। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि सौ प्रतिशत अन्सार चन्दा वक़्फ़ जदीद में क्यों शामिल नहीं हुए। सौ प्रतिशत शामिल होने चाहिऐं।

* क़ायद ज़हानत तथा सेहत जिस्मानी ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए निवेदन किया कि 30 प्रतिशत से अधिक अन्सार व्यायाम करते हैं। इसके अतिरिक्त हम ने एक हेल्पलाइन भी बनाई हुई है जिसके द्वारा अन्सारुल्लाह के समस्याएं इत्यादि सुनते हैं।

* हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने फ़रमाने पर आडीटर साहिब मजलिस अन्सारुल्लाह ने निवेदन किया कि वह लोकल जमाअतों का दौरा नहीं करते बल्कि उन्हें लोकल जमाअतों से त्री-मासिक रिपोर्टस प्राप्त होती हैं। ज़रूरत पड़ने पर कुछ मज्लिसों से और अधिक विस्तार से भी मंगवा लेते हैं और नियमित ऑडिट का काम करते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आडीटर का यह भी काम होता है कि वह नियमित मज्लिसों का दौरा करके वहां जाकर ऑडिट करे।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने क़ायद तजनीद से पूछा कि क्या आपकी तजनीद सही है। अपनी तजनीद को पूर्ण करने के लिए क्या कर रहे हैं? इस पर क़ायद साहिब तजनीद ने निवेदन किया कि हमारा लक्ष्य है कि हमारे पास 100 प्रतिशत अन्सार की तजनीद पूर्ण हो और इस के लिए हम तजनीद drives का आयोजन करते हैं। मज्लिसों को कहते हैं कि घर-घर जाकर तजनीद

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

जलसा का मक़सद ईमान और यक़ीन में तरक़्क़ी है

यह जलसे इसलिए आयोजित किए जाते हैं ताकि बार-बार हमें इस बात की याददहानी होती रहे कि हमारी बैअत का मक़सद क्या है।

अगर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा करना है तो अल्लाह तआला की इबादत का हक़ अदा करना होगा।

ईमान और यक़ीन और मार्फ़त बढ़ती है तब ही अल्लाह और इस के रसूल की मुहब्बत में इज़ाफ़ा होता है।

''ख़ुशहाली का उसूल तक़्वा है।"

अक़्लमंदी का तक़ाज़ा तो यही है कि इन तीन दिनों को एक ट्रेनिंग कैंप के तौर पर समझा जाए।

हमेशा याद रखें ये तादाद में इज़ाफ़ा या मिशन और सैंटर्ज़ बनाना या मस्जिद तामीर करना उसी वक़्त फ़ायदा देता है जब उनके मक़ासिद को पूरा किया जाए।

हर अहमदी को जो इन पाबंदियों से आज़ाद हो कर ज़िन्दगी गुज़ार रहा है जो उनको पाकिस्तान में थीं खासतौर पर इस वजह से पहले से बढ़कर अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार होना चाहिए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने का हक़ अदा करने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए।

अपनी रुहानी इलमी और अख़लाक़ी हालत को बेहतर करने की कोशिश करनी चाहिए

अल्लाह तआला और इस के रसूल की हर बात को अपने हर मामला में तब ही रहनुमा बनाया जा सकता है जब हक़ीक़ी मुहब्बत हो।

यह कोई मामूली बात नहीं है कि दुनिया की मुहब्बत बिलकुल निकल जाए और अल्लाह और इस के रसूल की मुहब्बत इस पर ग़ालिब आ जाए। इस के लिए बड़ी कोशिश की ज़रूरत है।

जलसा सालाना के मक़ासिद पूरा करने और अल्लाह और इस के रसूल की मुहब्बत में हुक़ूक़ अल्लाह और हुक़ूक़ु ईबाद को अदा करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत के तक़ाज़ा पूरा करने की नसीहत

39 जलसा सालाना हॉलैंड का उद्घाटन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 27 सितम्बर 2019 ई. स्थान - जलसा गाह जमाअत अहमदिया हॉलैंड, नन सपीत (हॉलैंड)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत अहमदिया हॉलैंड का जलसा सालाना शुरू हो रहा है और कई साल बाद मुझे भी अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे रहा है कि आपके जलसा में शामिल हूँ। पिछले कई साल से अमीर साहिब जलसा पर आने का कहते रहे मगर दूसरी जमाअत की व्यस्तता की वजह से बावजूद इच्छा के यह मुम्किन नहीं हो सका। बहरहाल अल्लाह तआला का फ़ज़ल है कि वह मुझे आज इस जलसा में शामिल होने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़र्मा रहा है। पिछले कुछ सालों में हॉलैंड में जमाअत की संख्या में इज़ाफ़ा हुआ है 1/3 तो इज़ाफ़ा यक़ीनन हुआ है। बहुत से लोग पाकिस्तान से हिजरत कर के आए हैं, कुछ नए लोग भी जमाअत में शामिल हुए हैं। बहरहाल दुनिया की दूसरी जमाअतों की तरह हॉलैंड की जमाअत भी अपनी जो उनकी संख्या थी या जो उनके वसाइल थे इस लिहाज़ से तरक़्क़ी कर रही है। लिट्रेचर इत्यादि की इशाअत भी अब यहां बेहतर तरीक़े पर हो रही है। नए सैंटर और एक मस्जिद भी जमाअत को मिली है। अभी मैंने देखी तो नहीं लेकिन लोगों से अलमेरे की मस्जिद की ख़ूबसूरती की तारीफ़ सुनी है कि आप लोगों ने बड़ी अच्छी मस्जिद बनाई है। इंशा अल्लाह तआला अगले हफ़्ते उस का उद्घाटन अर्थात रस्मी उद्घाटन भी होगा। वैसे तो वहां नमाज़ें पढ़ी जा रही होंगी और पढ़ी जा रही हैं। लेकिन हमेशा याद रखें यह संख्या में इज़ाफ़ा या मिशन और सैंटर्ज़ बनाना या मस्जिद बनाना उसी वक़्त फ़ायदा देता है जब उनके मक़ासिद को पूरा किया जाए। अत: यहां रहने वाले हर अहमदी को अपनी समीक्षा करने की ज़रूरत है और इस बात की ज़रूरत है कि देखे और तलाश करे कि वे क्या मक़ासिद हैं जो हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर पूरे करने हैं।

जैसा कि मैंने कहा कि इन पिछले कुछ सालों में बहुत से अहमदी हिजरत कर के यहां आए हैं और यहां जमाअत की संख्या में भी इज़ाफ़ा हुआ है। क्यों हिजरत कर के आए हैं? इसलिए कि खासतौर पर पाकिस्तान में अहमदियों को मज़हबी आज़ादी नहीं है, अहमदियों को मज़हब के नाम पर तंग किया जाता है, उनके हुक़ूक़ छीन लिए जाते हैं इसलिए कि उन्होंने ज़माना के इमाम को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई और हुक्म के अनुसार स्वीकार किया है। हमें अल्लाह तआला का नाम लेने और इस की इबादत करने से इसलिए रोका जाता है कि हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ की बैअत में क्यों आए हैं। मस्जिदें बनाना तो एक तरफ़ हमें अपने लोगों की तर्बीयत के लिए जलसा और इज्तिमा करने से भी रोका जाता है बल्कि घरों में भी क़ानून की दृष्टि से हम नमाज़ें

नहीं पढ़ सकते। क़ुर्बानी की ईद पर हम जानवरों की क़ुर्बानी नहीं कर सकते बल्कि क़ानून उस की इजाज़त नहीं देता। इस पर भी मुक़द्दमे हो जाते हैं और इसलिए भी कि तथाकथित उल्मा और उनके चेलों के जज़बात मजरूह होते हैं। अत: ऐसे हालात में बहुत से अहमदी पाकिस्तान से हिजरत कर के दूसरे देशों जहां मज़हबी आज़ादी है चले जाते हैं, हिजरत कर गए हैं

आप में से भी जो यहां हिजरत कर के आए हैं उन्हें यहां मज़हबी आज़ादी भी है और आर्थिक और समाजिक लिहाज़ से भी अपनी हालतों को बेहतर करने के अवसर भी मिले हैं। अत: हर अहमदी को जो इन पाबंदियों से आज़ाद हो कर ज़िन्दगी गुज़ार रहा है जो उनको पाकिस्तान में थीं खासतौर पर इस वजह से पहले से बढ़कर अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार होना चाहिए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने का हक़ अदा करने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए। अपनी रुहानी ,इलमी और अख़लाक़ी हालत को बेहतर करने की कोशिश करनी चाहिए। इस बात पर ही ख़ुश नहीं हो जाना चाहिए कि हम आज़ाद हैं और कोई ऐसी पाबंदी हम पर नहीं है जो हमें अपने मज़हब पर अनुकरण करने से रोके। अगर हमारे कर्म अल्लाह तआला के आदेशों के अनुसार नहीं, अगर हमने अपने अंदर पवित्र तब्दीलियां पहले से बढ़कर पैदा करने की कोशिश नहीं की और अल्लाह तआला और इस के रसूल की मुहब्बत के इज़हार पहले से बढ़कर हमसे ज़ाहिर नहीं हो रहे तो इस आज़ादी का क्या फ़ायदा है, इन जलसों में शामिल होने का क्या फ़ायदा? ये मस्जिदें को तामीर करने का क्या फ़ायदा है? हक़ीक़ी फ़ायदा तो हमें इस आज़ादी का तब ही होगा जब हम बैअत का हक़ अदा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इन जलसों के आयोजन का ऐलान भी अल्लाह तआला से आज्ञा पा कर फ़रमाया था और इसलिए फ़रमाया था कि इन जलसों की वजह से हम में पवित्र तब्दीलियां पैदा हों, हम धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम करने वाले बनें और इस का सही फ़हम और इदराक हमें हासिल हो। हम अल्लाह तआला और इस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत अपने दिलों में पैदा करने वाले हूँ। अपनी रुहानी , अख़लाक़ी और इल्मी हालत बेहतर करने वाले हों और इस के लिए हर मुम्किन कोशिश करें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह जलसा के आयजन को ब्यान फ़रमाते हुए फ़रमाते हैं और अपनी बैअत में आने वालों को नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं कि "समस्त मुख़लसीन सिलसिला बैअत में दाख़िल होने वाले इस आजिज़ पर ज़ाहिर हो कि बैअत करने से उद्देश्य यह है कि ताकि दुनिया की मुहब्बत ठंडी हो। और अपने मौला करीम और रसूल मक़बूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत दिल पर ग़ालिब आ जाए और ऐसी हालत विच्छेद पैदा हो जाए जिस से आख़िरत का सफ़र मकरूह मालूम ना हो।

(आसमानी फ़ैसला, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 4 पृष्ठ 351)

अत: बहुत स्पष्ट इरशाद है कि मेरी बैअत में आकर सिर्फ़ ज़बानी दावा तक ना रहो बल्कि मुख़लसीन में शामिल हो जाओ और इख़लास और वफ़ा में इस वक़्त तरक़्क़ी हो सकती है जब अल्लाह तआला और उस के रसूल मक़बूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत सब मुहब्बतों से बढ़कर हो। इसलिए बैअत की शर्तों में भी आपने यह शर्त रखी है कि बैअत करने वाला अल्लाह तआला के कथन और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कथन को हर मामला में लक्ष्य क़रार देगा (उद्धरित इज़ाला औहाम भाग 2, रुहानी ख़ज़ाइन जिल्द 3 पृष्ठ 564) अल्लाह तआला और इस के रसूल की हर बात को अपने हर मामला में तब ही रहनुमा बनाया जा सकता है जब हक़ीक़ी मुहब्बत हो। अत: यह जलसा इसलिए आयोजित किए जाते हैं ताकि बार-बार हमें इस बात की याददहानी होती रहे कि हमारी बैअत का मक़सद किया है। यह कोई मामूली बात नहीं है कि दुनिया की मुहब्बत बिलकुल निकल जाए और अल्लाह और इस के रसूल की मुहब्बत इस पर ग़ालिब आ जाए। इस के लिए बड़ी कोशिश की ज़रूरत है। और जब हम ने बैअत का अहद किया है तो यह कोशिश करनी चाहिए और करनी पड़ेगी। हमें अपने दुनियावी कारोबार अपनी इबादतों के लिए क़ुर्बान करनी पड़ेंगे। दुनियावी व्यस्तता अल्लाह तआला के हक़ अदा करने के लिए क़ुर्बान करने पड़ेंगी। जो चीज़ हमें अल्लाह तआला के क़ुरब से रोकती है इस से बचना होगा। अगर हमारी मुलाज़मतें, हमारी तिजारतें अल्लाह तआला का हक़ अदा करने से रोकती हैं तो हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में रहने के लिए इन बुराईयों से अपने आपको बचाना होगा, इन रोकों को दूर करना होगा। इसी तरह अगर हमारे गर्व, हमारी तथाकथित दुनियावी इज़्ज़तें और शोहरतें, हमारी स्वार्थी सोचें और कर्म हुक़ूक़ुल ईबाद अदा करने से रोक रही हैं तो यह भी अल्लाह तआला के हुक्म की ना-फ़रमानी है। बन्दों के हुक़ अदा करना का भी अल्लाह तआला ने हुक्म फ़रमाया है और यह ना-फ़रमानी कर के हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में रहने के मक़सद को पूरा नहीं कर रहे।

फिर जिस बात की तरफ़ आप ने ध्यान दिलाया है वह है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत। आप ने स्पष्ट फ़रमाया कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत सारे इन्सानों से मुहब्बत से ज़्यादा होनी चाहिए, इन सब पर हावी होनी चाहिए क्योंकि ख़ुदा तआला तक अब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से ही पहुंचा जा सकता है। आप के हुक्मों पर अनुकरण कर के और आप की सुन्नत पर चल कर ही ख़ुदा तआला तक पहुंचा जा सकता है। दुआओं की क़बूलियत और अंजाम बख़ैर होने का वसीला अब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

'' देखो अल्लाह तआला क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाता है قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ (आले-इम्रान 32)'' अर्थात कह दे हे लोगो अगर तुम अल्लाह तआला से मुहब्बत रखते हो तो मेरा अनुकरण करो तो इस सूरत में वह भी तुम से मुहब्बत करेगा अर्थात अल्लाह तआला भी मुहब्बत करेगा उस वक़्त जब तुम रसूल मक़बूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी करोगे, उनकी सुन्नत पर अनुकरण करोगे, उनके हुक्मों पर अनुकरण करोगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "ख़ुदा के महबूब बनने के लिए सिर्फ़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी ही एक राह है और कोई दूसरी राह नहीं कि तुम को ख़ुदा से मिला दे। इन्सान का मुद्दा सिर्फ इस एक वाहिद लाशरीक ख़ुदा की तलाश होना चाहिए।' यही मक़सद होना चाहिए कि हमने सिर्फ वाहिद और लाशरीक ख़ुदा की तलाश करनी है किसी और चीज़ की तलाश नहीं करनी, किसी और को अल्लाह के मुक़ाबला पर खड़ा नहीं करना। फ़रमाया "शिर्क और बिदअत से बचना चाहिए, रसूम के आधीन और तामसिक इच्छाओं के अधीन ना बनना चाहिए।' फ़रमाया "देखो मैं फिर कहता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्ची राह के सिवा और किसी तरह इन्सान कामयाब नहीं हो सकता।"आप फ़रमाते हैं कि "हमारा सिर्फ एक ही रसूल है और सिर्फ एक ही क़ुरआन शरीफ़ उस रसूल पर नाज़िल हुआ है जिसके अनुकरण से हम ख़ुदा को पा सकते हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 124-125)

फ़रमाया तुम याद रखो कि क़ुरआन शरीफ़ और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़रमान के अनुकरण और नमाज़ रोज़ा इत्यादि जो मस्नून तरीक़े हैं उनके सिवा ख़ुदा के फ़ज़ल और बरकतों के दरवाज़े खोलने की और कोई चाबी है ही नहीं। यही एक रास्ता है कोई और दूसरा रास्ता नहीं। अत: उन बरकतों को प्राप्त करने के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत और इस मुहब्बत की वजह से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्मों पर चलना भी ज़रूरी है। अगर यह नहीं तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्पष्ट फ़र्मा दिया कि फिर मेरी बैअत भी बेफ़ाइदा है। तुम्हारा यहां जलसों पर जमा होना भी बेफ़ाइदा है। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मैं तो अल्लाह तआला के इस महबूब का आशिक़ हूँ। अत: अगर तुम मेरी बैअत में रहना चाहते हो तो लाज़िमन तुम्हें भी मेरे महबूब से मुहब्बत करनी होगी

फिर फ़रमाया अपने अंदर हालत इन्क़िता पैदा करो अर्थात ऐसी हालत पैदा करो जो दुनिया के खेल कूद और चका-चौंध से तुम्हें अलग कर दे। तुम्हारा हर कर्म अल्लाह तआला और इस के रसूल मक़बूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेशों के आधीन हो जाए। यक़ीनन दुनिया कमाना और दुनिया के काम और कारोबार करना यह मना नहीं है, ख़ुदा तआला ने ही उनका हुक्म दिया है। सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम ये काम किया करते थे, वे भी कारोबार करते थे ,व्यापार करते थे, उनके बड़े बड़े कारोबार थे। वे भी लाखों और करोड़ों के कारोबार करते थे और लेन-देन करते थे और लाखों और करोड़ों की जायदाद के मालिक थे लेकिन अल्लाह तआला और इस के रसूल की मुहब्बत उन पर ग़ालिब थी और वे हर वक़्त इस फ़िक्र में रहते थे कि हमने अल्लाह तआला की इबादत के हक़ भी अदा करने हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्मों की पैरवी भी करनी है। उन्हें यह फ़िक्र होती थी कि हम से कोई ऐसा कर्म न हो जाए जिससे हमारा महबूब हमसे नाराज़ हो। आजकल मैं ख़ुत्बों में सहाबा का ज़िक्र करता हूँ। बहुत सारे सहाबा की मिसालें मिलती हैं कैसी उनकी इबादतें थीं, कैसा उनका आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इताअत का स्तर था, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए किस मुहब्बत के उनके जज़बात थे। अत: उन्हें ये फ़िक्र होती थी कि हमारे

से ऐसा कोई कर्म ना हो जाए जो हमारे महबूब को हमसे नाराज़ कर दे। अत: हमारे ज़हनों में भी यह बात रहनी चाहिए कि समस्त दुनियावी व्यस्तता के बावजूद हमने अल्लाह तआला और इस के रसूल से मुहब्बत में कमी नहीं आने देनी। इंशा अल्लाह। और इस के लिए यथा सामर्थ्य अल्लाह तआला और के रसूल के हुक्मों पर अनुकरण करने की कोशिश करनी है और अपनी हालतों को बेहतर करने के लिए और जलसा के रुहानी माहौल से लाभ उठाने के लिए और अपनी व्यावहारिक हालतों में बेहतरी लाने के लिए ही हम इन तीन दिनों के लिए जमा हुए हैं

अत: यह हमेशा ख़्याल रखना चाहिए और यही हमारी सोच होनी चाहिए कि हमारे यहां तीन दिन जमा होने का मक़सद किया है। यही कि इस रुहानी माहौल से फ़ैज़ उठाएं, अपनी व्यावहारिक हालतों में बेहतरी लाने की कोशिश करें और अपनी बुराईयों को दूर करें, इन दिनों में इबादतों के साथ साथ ज़िक्र इलाही और इस्तिग़फ़ार की तरफ़ हम तवज्जा दें। अगर हमारी यह सोच नहीं तो हमारा जलसा पर आना फ़ुज़ूल है। अक़लमंदी का तक़ाज़ा तो यही है कि इन तीन दिनों को एक ट्रेनिंग कैंप के तौर पर समझा जाए और हमारी व्यावहारिक हालतों में जो कमियां हो गई हैं और हो जाती हैं जब इन्सान एक माहौल से बाहर निकलता है तो उन्हें दूर करने की कोशिश करें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह जलसा के लाभ बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि

''यथा सामर्थ्य तमाम दोस्तों को केवल अल्लाह तआला के लिए बातों के सुनने के लिए और दुआ में शरीक होने के लिए इस तारीख़ पर आ जाना चाहिए और फ़रमाया "और इस जलसा में ऐसे हक़ायक़ और मआरिफ़ के सुनाने का काम रहेगा जो ईमान और यक़ीन और मार्फ़त को तरक़्क़ी देने के लिए ज़रूरी हैं।

(आसमानी फ़ैसला, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 4 पृष्ठ 351-352)

अत: जलसा का मक़सद ईमान और यक़ीन में तरक़्क़ी है, मार्फ़त में बढ़ना है। आप ने एक अवसर पर यह भी फ़रमाया कि यह दुनियावी मेलों की तरह का मेला नहीं है।(उद्धरित शहादतुल क़ुरआन, रुहानी ख़ज़ायन भाग 6 पृष्ठ 395)कि हम इकट्ठे हो गए और शोर कर दिया और जमा हो गए और अपनी संख्या ज़ाहिर कर दी। यह तो मक़सद नहीं है। अत: जलसा पर आने वाले हर शख़्स को ,मर्द को भी, औरत को भी, जवान को भी, बूढ़े को भी इस तरफ़ तवज्जा रखनी चाहिए कि इस का ईमान और यक़ीन और मार्फ़त बढ़ेता कि ख़ुदा और उस के रसूल की मुहब्बत में इज़ाफ़ा हो। ईमान और यक़ीन और मार्फ़त बढ़ती है तब ही अल्लाह और इस के रसूल की मुहब्बत में इज़ाफ़ा होता है। अगर अल्लाह तआला के मुक़ाम और रसूल मक़बूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम की पहचान ही हमें नहीं है, अगर अल्लाह तआला की हस्ती का हमें यक़ीन ही नहीं है तो मार्फ़त किस तरह, तरक़्क़ी किस तरह हो सकती है। इस मार्फ़त में बढ़ने से ही ईमान में तरक़्क़ी होगी।

अत: हमें यह नहीं समझना चाहिए कि हम सिर्फ रौनक के लिए एक जगह जमा हो गए हैं और इधर उधर की बातें करने में वक़्त गुज़ार कर हम चले जाएं। अगर यह सोच है तो जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि फिर जलसा पर आना बेफ़ाइदा है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम नेकियों को करने की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए जिन में वे नेकियां भी हैं जो अल्लाह तआला के हुक़ूक़ अदा करने के लिए हैं और वे नेकियां भी हैं जो अल्लाह तआला के बंदों के हुक़ूक़ अदा करने के लिए हैं फ़रमाते हैं कि

''नेकी को केवल इसलिए करना चाहिए कि ख़ुदा तआला ख़ुश हो और इस की प्रसन्नता हासिल हो और इस के हुक्म की तामील हो इस बात को ध्यान में न रखें कि उस के कि इस पर सवाब हो या ना हो।' अत: यह है हक़ीक़ी मुहब्बत का फ़लसफ़ा कि अल्लाह तआला से मुहब्बत का तक़ाज़ा है कि हम उस के हुक्मों पर अनुकरण करें जिसमें इबादतें भी शामिल हैं और अल्लाह तआला के बंदों के हुक़ूक़ भी शामिल हैं और उन हुक्मों पर अनुकरण इसलिए नहीं करना कि इस के बदला में ख़ुदा तआला हमें अज्र देगा, कोई सवाब होगा। हाँ अल्लाह तआला किसी नेक अनुकरण को बग़ैर बदला के नहीं जाने देता, ज़रूर बदला देता है। हक़ीक़ी ईमान का तक़ाज़ा यह है जैसा कि आप ने फ़रमाया कि नेकी सिर्फ इसलिए नहीं करनी कि हमें कुछ मिले बल्कि इसलिए करनी है कि हमारे ख़ुदा का हुक्म है कि यह नेकियां करो। आप फ़रमाते हैं "ईमान तब ही कामिल होता है जबकि यह शंका और वहम बाच से उठ जाए।' बदला मिलेगा कि नहीं मिलेगा इस किस्म की सोचों में ना पड़ जाओ। अगर ये सोचें हैं तो ईमान कामिल नहीं हो सकता । फ़रमाया कि "यद्यपि यह सच है कि ख़ुदा तआला किसी की नेकी को ज़ाए नहीं करता । إِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ (अत्तौब: 120)'' कि अल्लाह तआला मुहसिनों का बदला कभी नष्ट नहीं करता। फ़रमाया "मगर नेकी करने वाले को बदला मद्दनज़र नहीं रखना चाहिए।।

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 371-372)

अत: हक़ीक़ी नेकी यही है कि बग़ैर किसी लालच के या इनाम के की जाए और इस उसूल को सामने रखकर हम बंदों से भी हुस्न सुलूक करें, एक दूसरे के हक़ अदा करने की कोशिश करें और इसलिए करें कि अल्लाह तआला का हुक्म है कि एक दूसरे से हुस्न सुलूक करो। रसूल मक़बूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हुक्म है, आप की सुन्नत है, आप के इर्शाद हैं कि एक दूसरे के हक़ अदा करने की कोशिश करो और उच्च अख़लाक़ दिखाओ तो चाहे बंदों से इस का बदला मिले या ना मिले, अल्लाह तआला ज़रूर उस नेकी का बदला देता है। अत: जब हमारा ख़ुदा ऐसा सुलूक हम से करता है तो किस क़दर बढ़कर हमारी यह ज़िम्मेदारी बनती है कि इस की रज़ा के लिए हम इन सारी बातों पर अनुकरण करें जिनके करने का हमें हुक्म दिया गया है और उन तमाम बुराईयों से बचें जिनसे बचने का हमें उसने हमें हुक्म दिया है

यहां आकर, इन देशों में आकर, तरक़्क़ी वाले देशों में आकर हमें अपनी हालतों और आज़ादी के नाम पर, हर किस्म की फ़ज़ूल बातों में पड़ने वाले माहौल में आकर हमें अपनी हालतों पर नज़र रखने की बहुत ज़्यादा ज़रूरत है। कई बार सुविधाएं नेकियों के करने में रोक बन जाती है। हालात बेहतर होते हैं, आदमी अपने भूतकाल को भूल जाता है। हम समझते हैं कि अनुक दुनियावी काम अगर हमने ना किया तो हमें नुक़्सान हो जाएगा लेकिन अल्लाह तआला फ़रमाता है कि रिज़्क़ देने वाला मैं हूँ। अत: यह बात प्राय दुनियादार में देखने में आती है कि वह इस तरफ़ तवज्जा देता है कि नुक़्सान ना मुझे हो जाए और अल्लाह के हक़ अदा नहीं करता और इस बात में बद-क़िस्मती से हम में से भी कुछ लोग शामिल हैं कि अपनी नमाज़ों को अपने कामों के लिए क़ुर्बान कर देते हैं। नमाज़ का वक़्त आया, दूसरी तरफ़ काम है तो नमाज़ छोड़ दी या नमाज़ कई बार बाद में जमा कर के पढ़ ली या काई बार पढ़ते ही नहीं , भूल जाते हैं लेकिन दुनियावी काम नहीं छोड़ते तो इस से बचने की हमें कोशिश करनी चाहिए। या फिर ऐसी जल्दी जल्दी नमाज़ें पढ़ते हैं कि जिस तरह एक फ़र्ज़ है जो गले से उतारना है जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि यह अल्लाह तआला से मुहब्बत नहीं है ,यह तो इस दुनिया से मुहब्बत का इज़हार है। अत: अगर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा करना है तो अल्लाह तआला की इबादत का हक़ अदा करना होगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस तरफ़ हमें तवज्जा दिलाई कि इस हक़ीक़त को समझो कि इबादत अल्लाह तआला की मुहब्बत ज़ाती से रंगीन हो कर की जाए

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 107)

यह असल चीज़ है। अल्लाह तआला की इबादत करो और फ़र्ज़ समझ के ना सिर से टालो बल्कि फ़र्ज़ में मुहब्बत ज़ाती हो जाए और इस से रंगीन हो कर यह इबादत की जाए और जब ज़ाती मुहब्बत से इबादत होगी फिर दुनियावी उद्देश्य सब ख़त्म हो जाएँगी। फिर धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम करने की हक़ीक़त ज़ाहिर होगी और जब दुनियावी उद्देश्य ख़त्म हो जाएँगी तो ख़ुदा फिर ऐसे ऐसे माध्यम से रिज़्क़ देगा कि इन्सान के वहम तथा सोच में भी नहीं होता। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है وَمَنْ يَتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۔ وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ (अत्तलाक 3-4) जो आदमी अल्लाह तआला का तक़्वा धारण करता है وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا जो शख़्स अल्लाह का तक़्वा धारण करता है अल्लाह तआला उस के लिए कोई ना कोई ऐसी राह ,रास्ता निकाल देगा और उसे वहां से रिज़्क़ देगा जहां से उसे रिज़्क़ आने का ख़्याल भी नहीं होगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस की वज़ाहत में फ़रमाते हैं कि अत: ख़ुशहाली का उसूल तक़्वा है। फिर फ़रमाया यह बिलकुल सच है कि ख़ुदा तआला अपने बंदों को ज़ाए नहीं करता और उनको दूसरों के आगे हाथ पसारने से महफ़ूज़ रखता है, हाथ फैलाने से महफ़ूज़ रखता है। फ़रमाया मेरा तो विश्वास है कि अगर एक आदमी अल्लाह के लिए और सच्चा मुत्तक़ी हो तो इस की सात नस्ल तक भी ख़ुदा रहमत और बरकत का हाथ रखता है।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 245)

और उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाता है सिवाए उस के कि ख़ुद कोई बदक़िस्मती से अपने ऐसे कर्म कर ले जो अल्लाह तआला के फ़ज़ल से महरूम हो जाए। आप फ़रमाते हैं कि

''इन्सान को चाहिए कि सारी कमंदों को जला दे।' जो भी माध्यम हैं, जो भी कमंदें हैं इन सब को जला दो " और सिर्फ मुहब्बत इलाही ही की कमंद को बाक़ी

रहने दे। सिर्फ एक माध्यम हो, एक कमंद हो, एक माध्यम समझो जिससे तुम सब कुछ हासिल कर सकते हो और वह है मुहब्बत इलाही की कमंद। आप फ़रमाते हैं "...सच है कि जो ख़ुदा का हो जाता है ख़ुदा उस का हो जाता है।" फिर फ़रमाते हैं "....ऐसे बनो कि ताकि तुम पर ख़ुदा तआला की बरकतों और इस की रहमत के आसार नाज़िल हूँ।" फ़रमाते हैं ".. वह शख़्स जिसका उम्र पाने से मक़सद सिर्फ सांसारिक दुनिया ही के आन्नद और लाभ हैं इस की उम्र क्या लाभ देने वाली हो सकती है?" जिसका मक़सद ही यह है कि मुझे उम्र मिल जाए और इस दुनिया की आसाइशें और लज़्ज़तें मुझे हासिल हो जाएं उस का फ़ायदा किया है। "इस में तो ख़ुदा का हिस्सा कुछ भी नहीं। वह अपनी उम्र का मक़सद सिर्फ उत्तम खाने खाने और नींद भर के सोने और बीवी बच्चों और उम्दा मकान के या घोड़े इत्यादि रखने या उत्तम बाग़ों या फ़सल पर ही ख़त्म करता है। वह तो सिर्फ अपने पेट का बंदा और पेट की इबादत करने वाला है।" ऐसा आदमी अल्लाह तआला का बंदा नहीं है और इस की इबादत करने वाला नहीं है बल्कि बंदा कहला ही नहीं सकता बल्कि वह तो सिर्फ अपने व्यक्तिगत उद्देश्यों की इबादत कर रहा है। इस को तो यह ग़रज़ है कि मेरी जायदाद हो, मेरी दौलत हो, मेरे घर हों, मेरे पास कारें हों, पहले घोड़े रखे जाते थे, घोड़ों की मिसालें दी हैं, आजकल कारों की मिसालें हैं, अच्छी अच्छी किस्म की कार हो। यह तो सिर्फ मक़सद नहीं है। हाँ अल्लाह तआला ने नेअमतें दी हैं उनसे फ़ायदा ज़रूर उठाना चाहिए लेकिन यह मक़सद ना हो। अगर सिर्फ यही मक़सद है तो फिर फ़रमाया वह तो सिर्फ उन चीज़ों का ही बंदा है और उनकी इबादत करता है और ऐसा शख़्स अल्लाह तआला का बंदा और इस की इबादत करने वाला नहीं कहला सकता। फिर बल्कि वह अपने ज़ाती उद्देश्यों की इबादत कर रहा है। फ़रमाया "उसने तो अपना मक़सूद मतलूब और माबूद सिर्फ़ नफ़सानी इच्छाओं और हैवानी आन्नदों ही को बनाया हुआ है।" यही उस की इच्छाए हैं। "मगर ख़ुदा तआला ने इन्सान के सिलसिला पैदाइश का उद्देश्य इस का बुनियादी मक़सद "सिर्फ अपनी इबादत रखी है।' जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है " وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ (अज़ज़ारियात 57) "और मैंने इन्सानों और जिन्नों को सिर्फ अपनी इबादत के लिए पैदा किया है। अत: फ़रमाते हैं "अत: सीमित कर दिया है।' यहां फ़ैसला कर दिया, पाबंद कर दिया "कि सिर्फ इबादत इलाही मक़सद होना चाहिए और सिर्फ उसी उद्देश्य के लिए यह सारा कारख़ाना बनाया गया है। इस के विरुद्ध उस के और ही और इरादे और और ही और इच्छाए हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 246-247)

लेकिन होता क्या है? दुनिया में इस वक़्त बिलकुल इस के ख़िलाफ़ हो रहा है, इस के उलट हो रहा है। इस मक़सद के बजाय हर इन्सान के और ही और इरादे हैं, दुनिया में पड़ गए हैं और और ही और इच्छाए हैं, इच्छाए भी अजीब तरह की हो गई हैं। अल्लाह तआला को हासिल करने की इच्छा से ज़्यादा दुनियावी इच्छाए बढ़ गई हैं। अत: यह बातें हमें ग़ौर और फ़िक्र में डालने वाली होनी चाहिएं कि किस तरह हम अपनी ज़िन्दगी के मक़सद को हासिल करने वाले बनें। सिर्फ इस सांसारिक ज़िन्दगी की फ़िक्र ना करें। हमारी सोचें, हमारी मेहनत सिर्फ इस दुनिया को हासिल करने में समाप्त ना हो जाए बल्कि हम अपनी ज़िन्दगी के असल मक़सद को हासिल करने के लिए अपनी सारी सलाहीयतें काम लाने वाले हों। इन देशों में आकर हम अल्लाह तआला के फ़ज़ल को जज़ब करने की कोशिश करते हुए उस की इबादत का हक़ अदा करने वाले बनें। हमारे इरादे और हमारी इच्छाएं और ही और ना हों जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया बल्कि हम अपने पैदा करने वाले को पहचानने वाले बनते हुए अपनी पैदाइश का हक़ अदा करने वाले बनें और इस ज़माना में जिस मक़सद के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मबऊस फ़रमाया है इस को पूरा करने वाले बनें। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"मैं इसलिए भेजा गया हूँ ता ईमानों को दृढ़ करूँ, मज़बूत करूँ और ख़ुदा तआला का वजूद लोगों पर साबित कर के दिखलाऊँ ,क्योंकि हर एक क़ौम की ईमानी हालतें निहायत कमज़ोर हो गई हैं और परलोक का संसार सिर्फ एक अफ़साना समझा जाता है। मरने के बाद की ज़िन्दगी को तो समझता ही कोई नहीं, समझते हैं एक कहानी है, अफ़साना है, कुछ भी नहीं होगा। फ़रमाया और हर एक इन्सान अपनी व्यावहारिक हालत से बता रहा है कि वह जैसा कि यक़ीन दुनिया और दुनिया के मान सम्मान पर रखता है और जैसा कि भरोसा उसे दुनियावी माध्यमों पर है यह यक़ीन और भरोसा हरगिज़ उस को ख़ुदा तआला और आलिम आख़िरत पर नहीं। ज़बानों पर कुछ और है मगर दिलों में दुनिया की मुहब्बत का ग़लबा है। ज़बान पर बेशक अल्लाह का नाम है लेकिन दिलों पर दुनिया की मुहब्बत का ग़लबा है और यह ग़लबा का इज़हार व्यवहारों से हो जाता है। आप ने फ़रमाया कि यहूद में ख़ुदा की मुहब्बत ठंडी हो गई थी तो मसीह आया था उस वक़्त उनको धर्म की तरफ़ लाने के लिए और ख़ुदा की तरफ़ लाने के लिए और अब मेरे ज़माना में भी यही हालत है। अत: मैं भी भेजा गया हूँ कि ईमान का ज़माना फिर आए और दिलों में तक़्वा पैदा हो।

(उद्धरित किताबुल बरिया , रुहानी ख़ज़ायन भाग 13 पृष्ठ 291 से 293 हाशिया)

अत: आज हमारा काम है कि आपकी बैअत का हक़ अदा करते हुए जहां अपने आपको ख़ुदा तआला की मुहब्बत में बढ़ाएं, तौहीद को अपने दिलों में मज़बूत करें। ख़ुदा तआला और इस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत के मुक़ाबला में दुनिया और इस की आसाइशों को पीछे करें वहां अपने अंदर इन पाक तब्दीलियों के साथ इस समाज को भी ख़ुदा तआला के क़रीब लाने की कोशिश करें। आज दुनिया ख़ुदा तआला के वजूद को मानने से इन्कार कर रही है और हर साल काफ़ी बड़ी संख्या में लोग ख़ुदा के वजूद से इन्कार करने वाले होते चले जा रहे हैं और मज़हब को छोड़ते चले जा रहे हैं, ईसाईयत में भी और दूसरे धर्मों में भी बल्कि कई बार मुस्लमानों में भी।

अत: जो ये लोग इन्कार करने वाले हो रहे हैं तो ऐसी सूरत में ख़ुदा तआला की मुहब्बत हम अपने दिलों में पैदा कर के दुनिया को भी ख़ुदा तआला के वजूद की हक़ीक़त से आगाह करें। तब ही हम इस जलसा के मक़सद को भी पूरा करने वाले होंगे और तब ही हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत के हक़ को भी अदा करने वाले होगे। सिर्फ अपने अंदर ख़ुदा तआला की मुहब्बत और इस के रसूल की मुहब्बत पैदा करना ही काफ़ी नहीं है , इतना ही काम नहीं हमारा बल्कि इस से भी बढ़कर काम है हमारा बल्कि अपनी औलादों और अपनी नस्लों के दिलों में भी ख़ुदा तआला की मुहब्बत और इस के रसूल की मुहब्बत पैदा करने के लिए हमें भरपूर कोशिश करनी होगी और इसी तरह जैसा कि मैंने कहा दुनिया को भी ख़ुदा तआला के वजूद की हक़ीक़त से आगाह करना होगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर, आप के मिशन को और आप के मक़सद को आगे बढ़ाना हमारी भी ज़िम्मेदारी है। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

यह जलसा के दिन अपनी इबादतों के स्तरों को बढ़ाने और उन पर मुस्तक़िल रहने के लिए हम व्यतीत करने वाले हूँ। अल्लाह तआला और इस के रसूल की मुहब्बत में हमेशा बढ़ते चले जाने वाले हों और दुनिया की लज़्ज़तें और ख़ाहिशात हम पर कभी हावी ना हों और यह भी याद रखें कि यह सब कुछ अल्लाह तआला के फ़ज़ल के बिना मुम्किन नहीं हो सकता इसलिए उस के फ़ज़लों को जज़ब करने के लिए भी बहुत दुआओं की ज़रूरत है और इस तरफ़ बहुत ध्यान देना होगा। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल18 अक्तूबर 2019 पृष्ठ 5 से 8)

☆ ☆ ☆

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

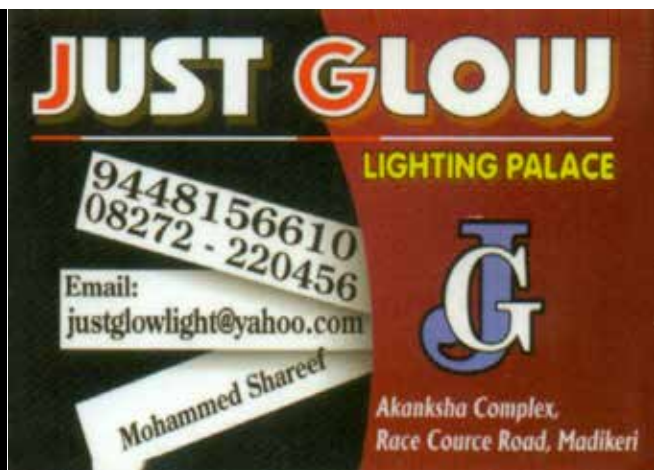

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 2 का शेष

पूर्ण करें। ऑनलाइन भी अन्सार की तजनीद अपडेट कर रहे हैं। इस तरह तजनीद पूर्ण कर रहे हैं।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने क़ायद ईसार से पूछने फ़रमाया कि क्या आपने वाटर फ़ार लाईफ़ या उस किस्म का कोई दूसरा प्राजैक्ट शुरू किया है? इस पर क़ायद ईसार ने निवेदन किया कि इस साल हमने पाकिस्तान में एक कुँआं लगवाया है। हमारा दस हज़ार डॉलरज़ का बजट है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि इतनी बड़ी मजलिस जिस में काफ़ी मुख़य्यर लोग भी हैं उस के लिए सिर्फ एक कुँआं काफ़ी नहीं है। आपको चाहिए कि कोई बड़ा प्राजैक्ट लें। एक कुँवें का ख़र्च तो सिर्फ एक आदमी अदा कर देता है।

क़ायद ईसार ने निवेदन किया कि इस साल हमारा मन्सूबा था कि हम बूढ़े और बीमार लोगों से मिलें। इसके अतिरिक्त जो मेम्बर चुस्त नहीं हैं उनके साथ भी सम्पर्क किए जाएं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने हिदायत देते हुए फ़रमाया: अन्सारुल्लाह यू एस ए अफ्रीक़ा में मॉडल विलेज के खर्चों को बर्दाश्त करे। अन्सारुल्लाह यू.के पाँच लाख पाऊंडज़ के खर्चों से बोरकीना फासो में एक आई हस्पताल बना रहे हैं। इसलिए कोई बड़ा मन्सूबा रखें।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने फ़रमाने पर क़ायद इशाअत ने निवेदन किया कि उनके तीन periodicals हैं जिसमें एक bi-weekly है, एक ई न्यूज़लेटर और एक सालाना रिसाला अन्नहल है जिसमें सालाना रिपोर्ट प्रकाशित की जाती है। ई न्यूज़लेटर 3300 अन्सार में बांटा जाता है और उसे 33 प्रतिशत अन्सार पढ़ते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: लोग रिपोर्टस इत्यादि में दिलचस्पी नहीं लेते इसलिए इस किस्म की सामग्री रखें जो लोगों की दिलचस्पी का कारण हो। इसी तरह अन्सार को तहरीक करें कि वे अल-हकम का भी अध्ययन किया करें।

* हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने फ़रमाने पर क़ायद माल ने निवेदन किया कि पिछले साल 2500 अन्सार चन्दा में शामिल हुए थे और इस साल हमारा टार्गेट है कि 2700 अन्सार शामिल हूँ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर क़ायद माल ने निवेदन किया कि औसत चन्दा प्रति नासिर के हिसाब से 303 डॉलर्ज़ सालाना है। लेकिन अगर इन मेम्बरों को शामिल ना करें जो कमाते नहीं हैं तो औसत 453 डॉलर्ज़ बनती है। क़ायद माल ने निवेदन किया कि जिनकी इनकम नहीं है उन के लिए हमने कम से कम 36 डॉलर्ज़ सालाना चन्दा का स्तर निर्धारित किया हुआ है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई कि चन्दा के बारे में लोगों को प्यार से ध्यान दिलाना है, ज़ो रज़बर्दस्ती नहीं करनी। चन्दा का महत्व बताते रहा करें।

* इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर मुआविन सदरग बराए IT ने निवेदन किया कि उनके सपुर्द अन्सारुल्लाह की वेबसाइट , रिपोर्टिंग और सर्वे इत्यादि करना है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने पूछा कि हर माह कितने लोग आपकी वेबसाइट पर आते हैं। इस पर मुआविन सदर ने निवेदन किया कि उसका उन्हें इल्म नहीं है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आजकल तो इस किस्म की मालूमात प्राप्त करना बड़ा आसान काम है।

*इसके बाद नायब सदर दौयम ने निवेदन किया कि उनके ज़िम्मा माल, तहरीक जदीद, वक़्फ़ जदीद, ऑडिट और ताहिर स्कॉलरशिप के डिपार्टमैंटस हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर नायब सदर दौयम ने निवेदन किया कि ताहिर स्कॉलरशिप के अन्तर्गत उन अन्सार की मदद की जाती है जिन्हें नौकरियों से निकाल दिया जाता है और वे बेरोज़गार होते हैं और कोई नई skill या काम सीखना चाहते हैं।

*नायब सदर सफ़ दौम ने निवेदन किया कि उनके सपुर्द विभाग सेहत है। इस के अतिरिक्त वह नेशनल इज्तिमा के नाज़िम आला भी हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने पूछा कि आपके कितने अन्सार वरज़िश करते हैं? साईकलिंग करते हैं? इस पर महोदय ने निवेदन किया कि 30 प्रतिशत शामिल होते हैं। कुछ मज्लिसों में लोकल कलब हैं वहां साईकलिंग इत्यादि करते हैं।

*इस मीटिंग में रीजनल नाज़मीन आला भी शामिल थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने बारी बारी उन नाज़िमीन से परिचय प्राप्त किया और उनके रीजनज़ की मज्लिसों और हर मजलिस की तजनीद के बारे में से पूछा। इसी तरह पूछा कि कितनी मज्लिसों active हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई कि सबसे पहले तो रीजनल नाज़िम आला को चाहिए कि वह सबसे ज़्यादा कर्मठ हो।

*एक रीजनल नाज़िम आला से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने पूछा कि क्या उनके रीजन के अन्सार नमाज़ बाजमाअत अदा करते हैं? इस पर नाज़िम आला साहिब ने निवेदन किया कि सारे अन्सार नहीं करते। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि टमाले में एक छोटी सी मस्जिद थी जो नमाज़ियों से भरी होती थी। इसलिए अन्सार को बार-बार ध्यान दिलाते रहा करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: नमाज़ बाजमाअत सबसे अहम चीज़ है। प्रत्येक को चाहिए कि वह पांचों समय नमाज़ें पढ़े और उनमें से कम से कम तीन नमाज़ें फ़ज्र, मग़रिब और इशा जमाअत के साथ अदा करे। अगर हर मजलिस में सौ प्रतिशत आमिला मैंबर्ज़ पाँच नमाज़ें जमाअत के साथ पढ़ें या कम से कम तीन नमाज़ें फ़ज्र , मग़रिब तथा इशा बाजमाअत पढ़ें तो आपकी संख्या बढ़ जाएगी। यह आप लोगों की डयूटी है। इस पर फ़ोकस करें और इस पर काम करें। मजलिस आमला के साथ यह मीटिंग 7 बजकर 20 मिनट पर ख़त्म हुई।

*इसके बाद सारी अराकीन आमिला को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

वाक़फ़ात नौ क्लास

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के मर्दाना हाल में तशरीफ़ ले आए जहां प्रोग्राम के अनुसार वाक़फ़ात नौ की क्लास का आयोजन हुआ। प्रोग्राम का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो प्रिया आबीह शाकिर वर्क ने की और उसका उर्दू अनुवाद प्रिया सय्यदह मेहरुन्निसा सबाहत ने पेश किया। जबकि अंग्रेज़ी अनुवाद प्रिया माहरा नासिर मोहर ने पेश किया।

इस के बाद प्रिया फ़ाइक़ा माहिम सय्यदा ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निम्नलिखित हदीस पेश की। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: भलाई के ज़माना के बाद ऐसा दौर आएगा जिस में जंग तथा लड़ाई और गुमराही की ख़ूब तरवीज और तब्लीग़ होगी। ऐसे वक़्त में अगर तू ख़ुदा का कोई ख़लीफ़ा पाए तो इस से चिमट जाना और इस को ना छोड़ना चाहे तुम्हारा जिस्म नोच दिया जाए और तुम्हारा सारा माल छीन लिया जाए।

(मुसन्द अहमद बिन हंबल, मस्नद अन्नासिर हदीस हुज़ैफ़ह रज़ि) उस के बाद प्रिया मलाहत महमूद ने हदीस का अंग्रेज़ी अनुवाद पेश किया।

इस के बाद प्रिया आईशा फ़ातिमा गोन्दल ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

अलैहिस्सलाम अस्सलाम का निम्नलिखित उद्धरण पेश किया। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं अत: मैंने केवल ख़ुदा के फ़ज़ल से ना अपने किसी हुनर से इस नेअमत से कामिल हिस्सा पाया है जो मुझसे पहले नबियों और रसूलों और ख़ुदा के सम्मानीयों को दी गई थी। और मेरे लिए इस नेअमत का पाना मुम्किन ना था अगर में अपने सय्यद तथा मौला फख़्रे अनबिया और ख़ैरुल वरा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के राहों की पैरवी ना करता। अत: मैंने जो कुछ पाया इस पैरवी से पाया और मैं अपने सच्चे और कामिल इल्म से जानता हूँ कि कोई इन्सान इस नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी ख़ुदा तक नहीं पहुंच सकता और ना मार्फत कामला का हिस्सा पा सकता है। (हक़ीक़तुल वह्य, रुहानी ख़ज़ाइन जिल्द 22 पृष्ठ 64, 65)

इस के बाद उद्धरण का अंग्रेज़ी अनुवाद प्रिया करतुल ऐन उबैदुल्लाह ने पेश किया। इस के बाद उर्दू नज़म प्रिया शमाइला अहमद और इस का अंग्रेज़ी अनुवाद प्रिया अरूसा मलिक ने पेश किया।

इसके बाद प्रिया समरीन शीराज़ ने उर्दू ज़बान में ख़िलाफ़त की बरकात के विषय पर तक़रीर की। इस के बाद प्रिया मदीहा अज़ीम क़ुरैशी , रोहा फ़रीदा और आलीया समरीन अहमद ने ख़िलाफ़त हमारी रग तथा जान के विषय पर एक परीज़नटीशन दी।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने वाक़फ़ात नौ बच्चियों को सवाल करने की इजाज़त प्रदान फ़रमाई।

*एक वाक़फ़ा नौ बच्ची ने सवाल पूछा कि अगर स्कूल में ग्रेड अच्छे ना हों तो क्या करना चाहिए? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि ज़्यादा मेहनत करें। अगर आप मेहनत करेंगे तो अल्लाह तआला उस का बदला भी देता है।

*एक वाक़फ़ा नौ बच्ची ने सवाल किया कि जैसा कि हम जानते हैं कि हमें अपने देश से वफ़ादारी करनी है लेकिन यहां इतनी ज़्यादा समस्याएं हैं । इन समस्याएं के होते हुए हम अपने देश से कैसे वफ़ादार रहें ?इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: समस्याएं तो स्यासी पार्टीयों के और सियासतदानों की हैं। आप को तो देश के साथ वफ़ादार रहना है। हुज़ूर ने फ़रमाया है कि देश से वफ़ादारी ईमान का हिस्सा है। अगर आपके ख़्याल में सियास्तदान सही नहीं हैं या फिर वह समाज के अमन को बर्बाद कर रहे हैं या फिर वह ईमानदारी से लोगों की तरफ़ अपनी ज़िम्मेदारी नहीं निभा रहे तो फिर भी आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि आप ऐसे रहनुमाओं के ख़िलाफ़ ना खड़े हों और समाज के अमन को बर्बाद मत करें। आप इंतिज़ार करें , दुआ करें और जब अगले चुनाव हों तो ऐसे लोगों को चुनें जो कि देश समाज और इन्सानियत के लिए फ़ाइदामंद और वफ़ादार हों।

*इसके बाद एक वाक़फ़ा नौ बच्ची ने सवाल पूछा कि हम जानते हैं कि SURROGATE इस्लाम में मना है। लेकिन अगर कोई DONATE EGG करना चाहे ताकि कोई और अपनी फ़ैमिली शुरू कर सके तो इस बारे में से क्या शिक्षा है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अगर जोड़े में से किसी एक में बांझपन है , मर्द या औरत में तब तो कुछ ईलाज हैं जैसे IVF या ऐसे बनावटी तरीक़े जिसमें कमज़ोर नुतफ़ा को रहम में डाला जाता है लेकिन इस्लाम कहता है रहम में अंडा और नुतफ़ा मियां और बीवी का ही होना चाहिए किसी और का नहीं।

*एक वाक़फ़ा नौ बच्ची ने सवाल किया कि मैंने स्कूल में पढ़ा है कि अगर कोई जिस्मानी तौर पर बहुत ज़्यादा अपंग है तो उसे बिना दर्द के मौत के घाट उतारा जा सकता है तो मैंने पूछना था कि क्या यह इस्लाम में जायज़ है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यह लोग उसे Mercy Killing कहते हैं । इस्लाम में यह जायज़ नहीं। इस्लाम कहता है कि जब तक तुम्हारी ज़िन्दगी है, तुम्हारा सांस है, जब तक तुम्हें अल्लाह तआला ने ज़िन्दा रखा हुआ है तुम ज़िन्दा रहो। किसी भी कुदरती तरीक़े से अपने आपको नहीं मारना। ना ज़हर से, ना गोली से ना ही किसी और तरीक़ा से। यह ख़ुदकुशी है।

*एक वाक़फ़ा नौ बच्ची ने सवाल किया कि आपने अब तक जितनी भी दुनिया देखी है आपको सबसे अच्छी जगह कौन सी लगी है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया सारी दुनिया ही अच्छी है। सारी दुनिया ही अल्लाह तआला की बनाई हुई है।

*एक वाक़फ़ा नौ ने सवाल किया कि मेरी बेटी अब स्कूल में जाती है और स्कूल में क्रिसमिस और Halloween के प्रोग्रामों होते हैं तो क्या मुझे अपनी बेटी को इस में शामिल होने की इजाज़त देनी चाहिए? हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि Halloween तो वैसे ही ग़लत है तो बाक़ी क्रिसमिस का क्या प्रोग्राम होता है? इस पर वाक़फ़ा नौ ने बताया कि पार्टी होती है जिस में तोहफे का तबादला होता है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि वहां जा कर ईसा के ख़ुदा का बेटा है के गाने नहीं गाने। वैसे जाना हो तो चले जाएं। बाक़ी तो तोहफे का ही तबादला है। आप भी इस की दोस्तों को ईद पर बुला लिया करें। और Halloween बिलकुल और चीज़ है उसकी बिलकुल इजाज़त नहीं है।

* एक वाक़फ़ा नौ ने सवाल किया कि इस वक़्त जमाअत को सबसे ज़्यादा कौन से माहरीन की ज़रूरत है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया कि सबसे ज़्यादा तो हमें डाक्टरों और टीचरों की ज़रूरत है।

*एक बच्ची ने सवाल किया कि हम बहैसीयत जमाअत किस तरह रीयल वर्ल्ड समस्याएं को बिना किसी सेंसर के बहस में ला सकते हैं। हमें नस्ली भेदभाव और घरेलू झगड़ों और ज़िद तथा मार पिटाई को ज़्यादा स्पष्टता के साथ ब्यान करना चाहिए। जमाअत के अंदर हमें महसूस होता है कि हम इन विषयों पर खुल कर बात नहीं करते बल्कि उन विषयों को छोड़ देते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आप कह रही हैं कि आम तौर पर वर्तमान समय के समस्याएं जमाअत का प्रोग्रामों में बहस में नहीं आती और हम उसे कैसे हल करें? इस्लाम तो नस्ली भेदभाव के ख़िलाफ़ है और आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुत्बा हज्जुतुल विदाअ में स्पष्ट तौर पर फ़रमाया कि किसी अरबी को किसी अजमी पर कोई फ़ज़ीलत नहीं और ना ही किसी अजमी को अरबी पर कोई फ़ज़ीलत है। अत: इस्लाम में नस्ली भेदभाव की कोई जगह नहीं है। अगर कोई द्वेष रखता है तो यह उस का व्यक्तिगत कर्म है। क्या आप ने कभी मुझ से या पहले खलीफ़ाओं से या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से ऐसा कुछ सुना है जिससे नस्ली भेदभाव को बढ़ावा मिले? आपने बैअत ख़लीफ़ा वक़्त की की है ना कि सदर लजना या सदर जमाअत या सेक्रेटरी या और किसी जमाअत का ओहदेदार या किसी जमाअत की तंज़ीम की। अगर उनमें से कोई भी ऐसा कर रहा है तो वे ग़लत कर रहा है और ऐसा कोई मामला मेरे सामने आता है तो मैं सख़्ती से इस का रद्द करता हूँ। अगर कोई ऐसा करता है तो यह उस की कम इल्मी है ना कि जमाअत की शिक्षा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अगर कोई पाँच वक़्त नमाज़ नहीं अदा कर रहा तो यह उसका व्यक्तिगत गुनाह है ना कि यह जमाअत की शिक्षा है। अगर जमाअत की सत्तर प्रतिशत संख्या ऐसा नहीं कर रही तो उसका यह अर्थ नहीं कि जमाअत उनका हौसला बढ़ावा किया जा रहा है कि वह नमाज़ ना अदा करें बल्कि यह तो उनकी अपनी कमज़ोरियाँ हैं। कोई अपनी

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

कमज़ोरियों को इस्लाम की या जमाअत की शिक्षा क़रार नहीं दे सकता।

वाक़फ़ात नौ की यह क्लास सवा आठ बजे तक जारी रही। आख़िर पर हुज़ूर अनवर ने सारी बच्चियों को तोहफे प्रदान फ़रमाए। इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार वाक़फ़ीन नौ की क्लास हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ शुरू हुई।

वाक़फ़ीन नौ की क्लास

प्रोग्राम का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो प्रिय सजील हैदर ख़ान ने की और इस का उर्दू अनुवाद प्रिय ख़्वाजा समर फ़राज़ ने पेश किया और अंग्रेज़ी अनुवाद प्रिय ख़ालिद अहमद हुसैन ने पेश किया। इस के बाद प्रिय हश्शाम अहमद मलिक ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुबारक हदीस पेश की।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम में नबुव्वत स्थापित रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा। फिर वह उस को उठा लेगा और नबुव्वत के पथ पर ख़िलाफ़त स्थापित होगी। फिर अल्लाह तआला जब चाहेगा इस नेअमत को भी उठा लेगा। फिर उस के बाद तक़दीर के अनुसार नुकसान पहुचाने वाली बादशाहत स्थापित होगी (जिससे लोग परेशान होंगे और तंगी महसूस करेंगे) जब यह दौर ख़त्म होगा तो इस की दूसरी तक़दीर के अनुसार इस से भी बढ़कर अत्याचार करने वाली बादशाहत स्थापित होगी। यहां तक कि अल्लाह तआला का रहम जोश में आएगा और इस ज़ुल्म तथा अत्याचार के दौर को ख़त्म कर देगा। इस के बाद फिर नबुव्वत के पथ पर ख़िलाफ़त स्थापित होगी। यह फ़र्मा कर आप ख़ामोश हो गए। इस हदीस का अंग्रेज़ी अनुवाद प्रिय ज़ाफिर अहमद ने पेश किया। इस के बाद प्रिय मुनीब अहमद ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम का निम्नलिखित उद्धरण पेश किया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम रिसाला अलवसीयत में तहरीर फ़रमाते हैं: तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना ज़रूरी है और इस का आना तुम्हारे लिए बेहतर है क्योंकि वह स्थायी है। जिसका सिलसिला क़यामत तक विच्छेद नहीं होगा। और वह दूसरी क़ुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं ना जाऊं। लेकिन मैं जब जाऊंगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो हमेशा तुम्हारे साथ रहेगी जैसा कि ख़ुदा का बराहीन अहमदिया मैं वादा है और वह वादा मेरी ज़ात के बारे में नहीं है बल्कि तुम्हारे बारे में वादा है जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं इस जमाअत को जो तेरे अनुयायी हैं, क़यामत तक दूसरों पर ग़लबा दूँगा। अत: ज़रूर है कि तुम पर मेरी जुदाई का दिन आए ताकि उस के बाद वे दिन आए जो स्थायी वादा का दिन है। वह हमारा ख़ुदा वादों का सच्चा और वफ़ादार और सादिक़ ख़ुदा है। वह सब कुछ तुम्हें दिखाएगा जिसका इस ने वादा फ़रमाया।

इसी तरह हुज़ूर फ़रमाते हैं: मैं ख़ुदा की तरफ़ से एक क़ुदरत के रंग में ज़ाहिर हुआ और मैं ख़ुदा की एक साक्षात क़ुदरत हूँ और मेरे बाद कुछ और वजूद होंगे जो दूसरी क़ुदरत का मज़हर होंगे।

(रिसाला अलवयीसत, रुहानी ख़ज़ायन, जिल्द 20, पृष्ठ 305,306)

इस के बाद प्रिय उसामा अहमद गुल ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उद्धरण का अंग्रेज़ी अनुवाद पेश किया। इस के बाद प्रिय अहमद सलाम ने अच्छी आवाज़ के साथ नज़्म पेश की। प्रिय हारिस चौधरी ने इस नज़्म का अंग्रेज़ी में अनुवाद पेश किया। इस के बाद प्रिय ईक़ान अहमद और ज़ीरक अहमद ने ख़िलाफ़त की बरकात के विषय पर एक Presentation दी। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने वाक़फ़ीन नौ बच्चों को सवाल करने की इजाज़त प्रदान फ़रमाई।

*एक वाक़िफ़ नौ बच्चा ने सवाल किया कि हुज़ूर के इस दौरा अमरीका का सार क्या है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: जब दौरा ख़त्म होगा तो फिर बताऊंगा।

*एक वाक़िफ़ नौ ने सवाल किया कि क़सर नमाज़ की क्या शर्तें हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया क़ुरआन और हदीस की दृष्टि से जब आप सफ़र में हों , ख़तरे की हालत में हों तो नमाज़ क़सर की जाती है। हदीस से जो साबित होता है चौदह दिन तक का सफ़र है तो दो हफ़्ते तक नमाज़ क़सर कर सकते हैं। अगर आप किसी जगह दो हफ़्ते के लिए ठहरते हैं तो नमाज़ क़सर करें लेकिन अगर प्रोग्राम दो हफ़्ते से ज़्यादा ठहरने का है तो फिर क़सर नमाज़ नहीं है।

*एक वाक़िफ़ नौ बच्चे ने सवाल किया कि अगर अल्लाह तआला हर चीज़ को शीघ्र बना सकता है तो ज़मीन आसमान बनाने के लिए छ: या सात दिन क्यों लिए? इस के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यह हमारे छ: सात दिन नहीं हैं बल्कि अल्लाह तआला के दिन हैं। यह दरअसल विभिन्न स्तर हैं, यह तमसीली भाषा प्रयोग की गई है। अल्लाह तआला ने हर चीज़ एक उन्नति को अनुकरण से गुज़ारते हुए बनाई है। आप उन्नति के बारे में पढ़ते हैं। अल्लाह तआला पहले दिन भी अक़्ल दे सकता था लेकिन अल्लाह तआला की इसी में हिक्मत थी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इसी तरह कुफ़्फ़ार ने सवाल किया कि अल्लाह तआला क़ुरआन करीम को एक बार ही क्यों नहीं नाज़िल फ़र्मा देता? तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उसकी हिक्मत यह है कि ताकि तुम उस की शिक्षा को बर्दाश्त कर सको और याद भी रख सको। तो इन्सान की उन्नति धीरे-धीरे स्तर से हुई है इसी तरह दुनिया बनी है। पहले ज़िन्दगी नहीं थी, आग थी जो कि पानी से ठंडी हुई। फिर एक और प्रासैस चला। अत: इन विभिन्न स्तर को दिनों से तुलना दी गई है, यह नहीं कि हमारे दिन बल्कि यह तमसीली भाषा प्रयोग की गई है।

*एक वाक़िफ़ नौ बच्चे ने निवेदन किया कि जब हुज़ूर ख़लीफ़ा बने थे तो आपको कैसा महसूस हुआ था? और आप कब से ख़लीफ़ा हैं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने बच्चे से पूछा कि तुम्हारी उम्र किया है? तो बच्चे ने जवाब दिया कि ग्यारह साल। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जब तुम पैदा हुए थे इस से चार साल पहले ख़लीफ़ा चुना गया था। और जहां तक यह बात है कि कैसा लगा था तो ऐसे लगा था कि बहुत ज़्यादा बोझ पड़ गया है।

*एक ख़ादिम ने सवाल किया कि मेरी पिछले साल शादी हुई है। नए शादीशुदा जोड़ों के लिए कोई नसीहत फ़र्मा दें। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आपको शादी की मुबारक हो और नसीहत यह है कि प्रत्येक इन्सान में कमज़ोरियाँ होती हैं। कोई भी इन्सान कामिल नहीं होता, ना पति ना बीवी, ना लड़का ना लड़की। इसलिए अगर एक दूसरे की कमियां देखो तो अपनी ज़बान और आँखें बंद कर लिया करो। इस से बड़ी आराम से ज़िन्दगी गुज़रेगी।

*एक बच्चे ने सवाल किया कि हुज़ूर जब आप छोटे थे तो आपका क्या दिल करता था कि आप बड़े हो कर क्या बनेंगे? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि जो मेरा दिल करता था वह तो मैं नहीं बना।

*एक वक़्फ़ नौ ने सवाल किया कि सोने के बर्तन में खाना खाना हराम क्यों है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि सोना दिखावे की चीज़ है और अल्लाह तआला को दिखावा और ऐसी चीज़ें पसंद नहीं। एक तरफ़ तुम सोने के बर्तन में खाना खा रहे हो और ग़रीब आदमी को मिट्टी के बर्तन में भी खाना नहीं मिलता। एक तो यह वजह है दूसरा अल्लाह तआला पसंद नहीं फ़रमाता कि अपनी दौलत का इस तरह प्रकट किया जाए, आजकल दुनिया में हमारे मुसलमान बादशाह भी इस तरह का प्रकट कर रहे होते हैं। अल्लाह तआला को यह पसंद नहीं है। अल्लाह तआला को सादगी-पसंद है। इस से बेहतर है ग़रीबों को पैसा दो ख़ैरात करो , लोग भूखे मर रहे हैं , सूडान में, सोमालिया में और यमन में उनको दो। यह एहसास दिलाने के लिए है कि एक तरफ़ सोने में खाने वाले और दूसरी तरफ़ लोग भूख से मर रहे हैं। अल्लाह तआला को सादगी-पसंद है इसलिए अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को कहा कि तेरी आजिज़ाना राहें उसे पसंद आएं। तो विनम्रता अल्लाह तआला को बहुत पसंद है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने एक शेअर में भी कहा है कि तुम अपने आपको लोगों से कमतर समझो, विनम्रता दिखाओ। अगर तुम सोने चांदी के बर्तनों में खाना खाओगे तो तुम्हारे अन्दर गर्व , लापरवाही और अहंकार पैदा हो जाएगा और गर्व तथा अंहकार अच्छा नहीं होता और अल्लाह तआला से दूर ले जाता है।

*एक वाक़िफ़ नौ ने निवेदन किया कि प्यारे हुज़ूर मेरा सवाल नहीं है लेकिन मैं हुज़ूर अनवर का तह दिल से शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ कि हुज़ूर अनवर इतनी ज़्यादा व्यस्तता से वक़्त निकाल कर हमारे पास तशरीफ़ लाए हैं और हमारे साथ वक़्त गुज़ारा है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जज़ाकमुल्लाह। इसी तरह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल

अज़ीज़ ने पूछा कि तुम यहां कब आए थे तो ख़ादिम ने जवाब दिया कि पंद्रह साल हो गए। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि पंद्रह सालों में तुमने अपनी उर्दू और आवाज़ अच्छी रखी हुई है।

वाक़फ़ीन नौ के साथ यह क्लास सवा नौ बजे तक जारी रही। आख़िर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सारी शामिल होने वाले वाक़फ़ीन को बारी बारी जाए नमाज़ प्रदान फ़रमाए। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह तशरीफ़ ले गए।

31 अक्तूबर2018 ई (दिनांक बुध)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े छः बजे मस्जिद बैतुल रहमान में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह में तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फ़रमाई और हिदायतों से नवाज़ा और विभिन्न दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्तता रही।

इंटरनेशनल रिलीजियस फ्रीडम अमरीका के एंबेसडर की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार 10 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मीटिंग रुम में तशरीफ़ लाए जहां इंटरनेशनल रिलीजियस फ्रीडम अमरीका के एंबेसडर Sam Brownback साहिब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाक़ात के लिए आए हुए थे। उनके साथ उनके एक क़रीबी दोस्त Richard Simmons और उनके स्टाफ़ के दो मेम्बरों Sameer Hossein और Howard Chuang भी मौजूद थे।

एंबेसडर साहिब ने बताया कि उन्हें इस बात की बहुत ख़ुशी हुई कि यू.ऐस स्टेट डिपार्टमैंट ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को पूर्ण port courtesies उपलब्ध कीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला इंतहापसंदी और शिद्दत पसंदी के ख़िलाफ़ एक अहम आवाज़ हैं। इसलिए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को जो भी courtesies मिली हैं वह हुज़ूर अनवर के मुक़ाम के अनुसार हैं।

इसके बाद एंबेसडर साहिब ने पाकिस्तान में अहमदियों की परसीकीवशन के बारे में से बात की। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: पाकिस्तान और मलेयशिया में तो हमारे ख़िलाफ़ क़ानून बना हुआ है। यहां हम अपने मज़हब को प्रकट नहीं कर सकते। इसी तरह बंगलादेश, इंडोनेशिया और मिडल ईस्ट देशों में भी हमारा विरोध है। मज़हब के प्रकट पर मुश्किलें का सामना करना पड़ता है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया इस्लामी शरीयत में इर्तिदाद के बारे में क़ानून नहीं है। जो इस बारे में कहते हैं कि उसकी यह सज़ा है वे अपनी तरफ़ से अपनी व्याख्या के अनुसार कहते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने अब्दुल शकूर साहिब की क़ैद और सज़ा के बारे में से ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि 82 साल उनकी उम्र है और उनको इस बात पर गिरफ़्तार किया गया कि उन्होंने अहमदियों की तरबीयत के लिए कुछ किताबें अपनी दुकान में रखी हुई थीं। Anti Terrorist Police ने शस्त्रों से मुसल्लह हो कर उनकी दूकान पर raid किया और दहशतगर्दी के इल्ज़ाम में उनको गिरफ़्तार किया और क़ैद की सज़ा दी।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: मज़हब इन्सान के दिल का मामला है। एक इन्सान जो मानता है इस का सम्बन्ध दिल से है। कोई दूसरा शख़्स किस तरह कह सकता है कि जो तुम्हारा अक़ीदा है, जो दावा है, जो तुम्हारे दिल में है तुम इस पर ईमान नहीं रखते। कोई भी दूसरा शख़्स यह नहीं कह सकता।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया पाकिस्तान में मुल्लां की पोलीटिक्ल वैल्यू नहीं है, स्ट्रीट वैल्यू है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि 1999 ई में मैं भी दस ग्यारह दिन के लिए जेल में रहां हूँ। इन्ही क़ानून के अन्तर्गत जो हकूमत पाकिस्तान ने ज़ालिमाना तौर पर अहमदियों के ख़िलाफ़ बनाए हैं।

पाकिस्तान में अहमदियों के वोट के हक़ के बारे में बात हुई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हमें वोट देने का हक़ नहीं है। हमारे लिए उन्होंने यह शर्त रखी है कि पहले अपने आपको ग़ैर मुस्लिम कहो और ना मुसलमानों की तरह अनुकरण करो तो फिर तुम्हें वोट देने का हक़ देंगे।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि सबसे पहले तो हुकूमत को चाहिए कि वह अहमदियों को वोट का हक़ दे। फ़ौरी तौर पर blasphemy law का ख़ात्मा बेशक ना हो लेकिन अहमदियों को वोट का हक़ शीघ्र मिलना चाहिए।

एंबेसडर Brownback साहिब ने पूछने किया कि दूसरे सुन्नी मुसलमान अहमदियों से इस कदर नफ़रत क्यों करते हैं? इसके जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हम ईमान रखते हैं कि नबी करीम आख़री नबी हैं और क़ुरआन करीम आख़री किताब है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पेशगोई फ़रमाई थी कि आख़री ज़माना में मसीह तथा महदी आएगा और इस्लाम का पुनरुद्धार नौ करेगा। इन-सुन्नी मुसलमानों का अक़ीदा है, मसीह ज़िन्दा आसमान पर मौजूद है, वह आसमान से आएगा।

हम कहते हैं कि मसीह ज़िन्दा आसमान पर नहीं है बल्कि फ़ौत हो चुका है, आसमान से कोई नहीं आएगा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि जब मसीह आएगा तो इस का टाइटल नबी का होगा। दूसरे मुसलमान कहते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आख़री नबी हैं, इसलिए उनके बाद अब कोई नबी नहीं आ सकता। लेकिन इस बात को मानते हैं कि अगर मसीह आसमान से आए तो वह नबी होगा। लेकिन इस आसमान से आने वाले मसीह अलैहिस्सालम के अतिरिक्त अगर कोई दूसरा शख़्स दावा करे कि ख़ुदा तआला ने उसे भेजा है और वह नबी है तो यह ग़लत है। हम कहते हैं कि आप अल्लाह तआला की सिफ़तों को ख़त्म नहीं कर सकते। वह किसी को नबी के टाइटल के साथ भेज सकता है। यह बात स्पष्ट है कि नई शरीयत नहीं आ सकती। नबी करीम की शरीयत के अधीन नबी आ सकता है।

जमाअत अहमदिया के संस्थापक अहमदिया ने यही दावा किया कि आप मसीह हैं, महदी हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शरीयत के अधीन नबी हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यही पेशगोई फ़रमाई थी कि आने वाला मसीह आपकी उम्मत में से आए गा और इस्लाम का पुनरुद्धार करेगा। तलवार के जिहाद की बजाय इस्लामी शिक्षाओं के द्वारा अमन फैलाएगा।

मसीह मूसवी की तरह आएगा। अत: हमारा यह अक़ीदा है कि नबी आ सकता है, नई शरीयत के साथ नहीं बल्कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शरीयत के आधीन आ सकता है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: इस वजह से हमको इस्लाम के दायरा से बाहर निकाल दिया है कि तुम नबी को मानते हो। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: सब धर्मों वाले इस इंतज़ार में हैं कि कोई मुस्लेह आएगा। हमारा अक़ीदा है कि सारी नबियों की पेशगोइयों के अनुसार आख़री ज़माना में जिसने आना था, वह आ चुका है और आख़री ज़माना में सिर्फ एक ही ने आना था और सबको एक हाथ पर मुत्तहिद करना था।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: हज़रत ईसा अलैहिस्सालम ने जब दावा किया तो बनी इस्राईल ने कहा था कि आपको किस तरह मान लें जबकि किताबों में लिखा है कि मसीह से पहले एलिया नबी ने आना है और एलिया अभी नहीं आया। आप ने जवाब दिया कि जो एलिया है वह यह्या हैं। मानना चाहते हो तो मानो।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: हर मज़हब में कुछ ऐसी चीज़ें और शिक्षा में कुछ इस्तिआरे होते हैं जिनकी विभिन्न लिहाज़ से व्याख्या की जाती है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: हमें बहैसीयत इन्सान एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए। सब धर्मों में एक बात कॉमन, साझी है जिस पर हम सब इकट्ठे हो सकते हैं। अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में फ़रमाया है : تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ आओ इस एक बात पर ही इकट्ठे हो जाएं जो हमारे और तुम्हारे मध्य साझी है और वह ख़ुदा की ज़ात है। हमारा सब का ख़ुदा एक ही है। आओ इसी बात पर इकट्ठे हो जाएं। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सालम पर सब ईमान लाते हैं तो इस बिना पर भी हम सब मिलकर रह सकते हैं। एक हो कर रह सकते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अब हल यही है कि मिलकर बैठें और मानवता के लिए सोचें और मसले हल करें।

एंबेसडर साहिब ने निवेदन किया कि वह यरूशलम, सऊदी अरब और वीटीकन सिटी में इब्राहीमी धर्मों का एक सिंपोज़ियम आयोजित करना चाहते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हैफा में हमारी जमाअत स्थापित है। वहां हमारा मिशन और मस्जिद भी है। हमारे वहां सब के साथ बड़े अच्छे सम्बन्ध

हैं और सब हमारा भी इज्जत तथा सम्मान करते हैं। आप वह भी venue के तौर पर रख सकते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: सबसे अहम चीज़ यह है कि अमन, रवादारी और बर्दाश्त पैदा हो और आज दुनिया को उसी की ज़रूरत है।

एंबेसडर साहिब ने पाकिस्तान जा कर रब्वह देखने की इच्छा को प्रकट किया जिस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: आप ज़रूर जाएं और जा कर रब्वह देखें।

एंबेसडर साहिब की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ यह मुलाक़ात 10 बजकर 35मिनट तक जारी रही। आख़िर पर महोदय ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

यू.ऐस कांग्रस मैन की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार यू ऐस कांग्रस मैन Jamie Raskin ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इस मुलाक़ात में कांग्रस मैन के सीनीयर कौंसल Devon Ombres भी मौजूद थे।

कांग्रेस मैन ने बताया कि उन्होंने House of Representative के फ़्लोर से शकूर भाई के हक़ में आवाज़ उठाई थी और उन्हें prisoner of conscience कहा।

महोदय ने निवेदन किया कि हुज़ूर अनवर इस्लाम में बड़ी मज़बूत और मुनज़्ज़म ब्रांच के लीडर हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: असल यह है कि हम इस्लाम की असल वास्तविक शिक्षा पर अनुकरण करते हैं। कोई नई शिक्षा नहीं है। हम तो क़ुरआन करीम की शिक्षाओं पर अनुकरण करते हैं।

अहमदियों की पर्सी क्यूशन के बारे में कांग्रेस मैन ने पूछा जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने विस्तार से बयान करते हुए फ़रमाया कि ज़ुल्फ़क़ार अली भुट्टो ने 1974 ई में हमें ग़ैर मुस्लिम क़रार दिया था ताकि दुनिया में उसे मुसलमानों की लीडरशिप मिल जाए। बाद में 1984 ई में इस वक़्त के डिक्टेटर ज़िया उल-हक़ ने हमारे ख़िलाफ़ और अधिक बड़े सख़्त क़नून बनाए कि अहमदी तब्लीग़ नहीं कर सकते, अपने आपको मुसलमान नहीं कह सकते, बच्चों का इस्लामी नाम नहीं रख सकते। मस्जिद को मस्जिद नहीं कह सकते। अगर अस्सलामो अलैकुम कहें तो तीन साल क़ैद की सज़ा होगी।

हुज़ूर अनवर ने अब्दुल शकूर साहिब (शकूर भाई) का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि उनको केवल इस वजह से गिरफ़्तार किया गया कि उन्होंने अहमदियों की तरबीयत के लिए कुछ किताबें अपनी दुकान में रखी हुई थीं। ऐन्टी टेरोरिस्ट पुलिस मुसल्लह हो कर आई और उन पर दहश्तगर्द होने का इल्ज़ाम लगा कर गिरफ़्तार कर लिया और आजकल यह जेल में हैं और 82 साल उनकी उम्र है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया: मुलां की पोलीटिक्ल वैल्यू नहीं है, सिर्फ स्ट्रीट वैल्यू है।

कांग्रस मैन के पूछने पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: मैं पहले पाकिस्तान में था। अब लंदन में मुक़ीम हूँ। पाकिस्तान में इन विरोधी क़ानूनों की वजह से अपने फ़राइज़ मंसबी अदा नहीं कर सकता।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: मज़हब में जबर नहीं है। इस्लाम अमन,भाईचारा, रवादारी और सलामती का मज़हब है। सारी दुनिया से ख़ासकर अफ़्रीक़ा के देशों से हर साल लाखों लोग अहमदियत क़बूल कर रहे हैं। बावजूद बहुत विरोध के पाकिस्तान से भी लोग अहमदियत में दाख़िल हो रहे हैं। कुछ अपने अहमदी होने को ज़ाहिर नहीं करते, अगर ज़ाहिर करेंगे तो उन क़ानून के अन्तर्गत आएँगे।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हमारा जो जिहाद है वह यह है कि समाज में अमन तथा सलामती और रवादारी की स्थापना हो। लोग अपने पैदा करने वाले को पहचानें और इस की सृष्टि के हुक़ूक़ अदा करें और समाज में न्याय तथा इन्साफ की स्थापना हो। यही असल जिहाद है, जो इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा और आप के सच्चे ग़ुलाम जमाअत अहमदिया के संस्थापक अहमदिया हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बताया है और आज जमाअत अहमदिया हर जगह उसी जिहाद में व्यस्त है।

स्टेट और मज़हब के अलग होने के बारे में से ज़िक्र हुआ तो इस पर कांग्रेस मैन ने कहा वह इस बारे में से एक निबंध लिखना चाहते हैं जिसमें वह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के उपदेशों को भी quote करना चाहते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने जमाअत में रज़ाकार उन के काम के बारे में से विस्तार बयान फ़रमाई कि किस तरह जमाअत हर साल लाखों डालर बचाती है। हमारे जलसों के अवसर पर हज़ारों लोगों का खाना हमारे वालनटीइरज़ पकाते हैं। जहां आप लोग मिलियनज़ ख़र्च करते हैं वहां हम वह काम कुछ हज़ार में कर लेते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अहमदियों के ख़िलाफ़ जो हुकूमत ने क़ानून बनाए हुए हैं उनकी वजह से अहमदियों के ख़िलाफ़ पर्सी क्यीशन, स्टेट पर्सी क्यूशन है। वहां हमारी औरतें जब चीज़ें ख़रीदने के लिए दुकान पर जाती हैं तो दुकानदार कहता है कि तुम अहमदी हो, दुकान से निकल जाओ। इस पर कांग्रेस मैन ने निवेदन किया कि कैसे पता चल जाता है कि यह अहमदी है तो इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अहमदियों के भूमिका, रवैय्या और रुख रखाओ से पता चल जाता है और मुल्ला भी जासूसी करते हैं, अहमदियों पर नज़र रखते हैं तो इल्म हो जाता है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अब पाकिस्तान में यह भी हुआ है कि ईदुल-अज़हा के अवसर पर क़ुर्बानी की जाती है। ईद के बाद पुलिस एक अहमदी के घर आई। जानवर भी ले गई और अहमदी को भी साथ ले गई। अब वहां तो पुलिस पब्लिक, मौलवी सब अहमदियों के ख़िलाफ़ पर्सीक्यूशन में involve हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अब पाकिस्तान में अहमदियों के ख़िलाफ़ नफ़रत का यह स्तर है कि इमरान ख़ान ने मुल्ला के दबाव से मजबूर हो कर एक अहमदी इकानोमसट आतिफ़ मियां को इकनॉमिक एडवाइज़री कौंसल से निकाल दिया है।

कांग्रेस मैन ने निवेदन किया अब वह पहले की तुलना में बढ़कर जमाअत के साथ मिलकर अहमदियों की पर्सी क्यूशन के बारे में काम करेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने 1999 ई में जो वक़्त जेल में गुज़ारा था, कांग्रेस मैन ने इस बारे में से भी सवाल किए और काफ़ी दिलचस्पी को प्रकट किया। कहने लगे कि अहमदियों की पर्सी क्यूशन उन्हें यहूदियों के साथ होने वाले अत्याचारों की याद दिलाती है।

कांग्रेस मैन Jamie Raskin की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से यह मुलाक़ात सवा ग्यारह बजे तक जारी रही। आख़िर पर महोदय ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

फ़ैमिली मुलाक़ातें और लोगों के विचारों

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए और प्रोग्राम के अनुसार फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं।

आज सुबह के इस सैशन में 74 फ़ैमिलीज़ के 395 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। आज मुलाक़ात करने वाली फ़ैमिलीज़ अमरीका की निम्नलिखित छः जमाअतों से आई थीं। ब्रुकलीन, पोटोमैक, रिचमंड, सिलवर स्प्रिंग, साऊथ वर्जीनिया,वलीइंग बोरो। इस के अतिरिक्त सऊदी अरब से आने वाले लोगों ने भी मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

*आदरणीय ख़लील अहमद साहिब जिनका सम्बन्ध न्यूयार्क की जमाअत ब्रुकलिन से है, मुलाक़ात के बाद अपने विचारों बयान करते हुए कहते हैं कि हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की ख़ुशी में हम दो तीन दिन से सो भी नहीं सके हैं। बच्चे हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात के लिए एक महीने से अधिक समय से तय्यारी करते रहे हैं। यह केवल ख़ुदा तआला का फ़ज़ल है जिसने हमें यह लम्हा भी दिखाया कि हमारे प्यारे ख़लीफ़ा हमारी आँखों के सामने हैं।

*आदरणीय असदुल्लाह मुहम्मद साहिब अमरीका की साऊथ वर्जीनिया जमाअत से अपनी फ़ैमिली के साथ मुलाक़ात के लिए आए थे, कहते हैं कि बच्चों और फ़ैमली के साथ यह मेरी पहली मुलाक़ात थी। हुज़ूर अनवर के बारे में हमने हमेशा सुना था कि हुज़ूर को अल्लाह तआला ने ग़ैरमामूली हाफ़िज़ा प्रदान फ़रमाया है। आज मुलाक़ात में हमने अपनी आँखों से इस बात को देख भी कर लिया। जब मेरी पत्नी ने मुलाक़ात के दौरान अपना परिचय अपने वालिद साहिब के नाम से करवाया

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 31 October 2019 Issue No. 44

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

तो हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि वह तो मुझे लंदन के जलसा पर मिले थे और ख़त भी लिखते रहते हैं। लाखों लोग ख़लीफ़ा वक़्त को ख़त लिखते हैं ओर मुलाक़ात के लिए आते हैं लेकिन ख़लीफ़ा वक़्त का अपने उश्शाक को याद रखना ग़ैरमामूली और चमत्कार वाली बात नहीं तो और किया है।

*एक साहिब ज़ुबैर अख़तर साहिब अपनी फ़ैमिली के साथ न्यूयार्क से पाँच घंटे का सफ़र तय करके अपने आक़ा की मुलाक़ात के लिए पहुंचे थे, बयान करते हैं कि हम 2016 ई में अमरीका आए। पाकिस्तान में हमें हुज़ूर अनवर की ज़मीनों पर काम करने का अवसर मिला। मुलाक़ात के दौरान सारी फ़ैमिली ने महसूस किया कि हुज़ूर अनवर का चेहरा मुबारक एक ख़ास नूर से मुनव्वर और चमकता हुआ मालूम होता है। उनके बेटे हमदान साहिब बयान करते हैं कि जब वह हुज़ूर अनवर के दफ़्तर में दाख़िल हुए तो उनको ऐसा महसूस हुआ कि जैसे वहां कोई और ही दुनिया है जिसको शब्द में बयान करना उनकी ताक़त से बाहर है।

*एक दोस्त मुहम्मद शाहिद साहिब ने अपनी फ़ैमिली के साथ हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। महोदय बयान करते हैं कि मुलाक़ात के दौरान ऐसा महसूस हुआ कि जैसे वक़्त रुक सा गया हो। इर्दगिर्द की दुनिया ठहर गई हो और अब मुलाक़ात के बाद में यूं महसूस करता हूँ जैसे दुबारा नए सिरे से इस दुनिया में वापस आया हूँ। मैंने पहले भी अपनी एक मुलाक़ात में हुज़ूर अनवर से दला मिलने की दरख़ास्त की थी तो हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया था कि अभी बहुत सारे लोग मुलाक़ात के लिए लईनों में इन्तज़ार कर रहे हैं। लिहाज़ा अभी नहीं फिर कभी। मैंने हुज़ूर अनवर को यह बात बताई तो हुज़ूर अनवर ने इंतिहाई दया फ़रमाते हुए मुझे गले मिलने का सौभाग्य प्रदान किया।

*मुदस्सर चौधरी साहिब अपनी पत्नी के साथ कई घंटों की दूरी तय करके हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात के लिए हाज़िर हुए थे वह कहते हैं: यह हमारी हुज़ूर अनवर से पहली मुलाक़ात थी। उनकी पत्नी कहने लगीं कि हुज़ूर अनवर के चेहरा मुबारक पर एक अजीब नूर है जो फ़ौरन दिलों को अपनी तरफ़ खींच लेता है और ऐसा महसूस होता है कि अल्लाह तआला के फ़रिश्तों ने आपको घेरा हुआ हो। हुज़ूर अनवर से मिलकर ऐसा महसूस होता है कि हमारे दिल अमन में आ गए हों और हम बस हुज़ूर अनवर का दर्शन करते रहें और वक़्त थम जाए।

*ब्रुकलीन जमाअत न्यूयार्क से आने वाले एक दोस्त मिर्ज़ा मुहम्मद अदनान साहिब की अपनी फ़ैमिली के साथ हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात थी। कहने लगे कि आज हम अपने आपको बहुत ख़ुश-क़िस्मत विचार कर रहे हैं। आज हुज़ूर अनवर से हमारी पहली मुलाक़ात थी। मुलाकात के दौरान एक बात ऐसी हुई कि जिसे में कभी भुला नहीं सकता। जब मैंने हुज़ूर अनवर की सेवा में निवेदन किया कि ख़ाकसार डाक्टर बन रहा है तो हुज़ूर अनवर ने मुझे एक क़लम तबर्रुक के रूप में इनायत फ़रमाया और नसीहत फ़रमाई आप अपना पहला नुस्ख़ा इस से लिखें यह आप के लिए बरकतों वाला होगा।

*राना मुहम्मद मुहसिन साहिब ने अपनी फ़ैमिली के साथ मुलाक़ात करने का सौभाग्य पाया। महोदय बयान करते हैं कि आज हमारी ज़िन्दगी की पहली मुलाक़ात थी। हुज़ूर अनवर से मिलकर इस तरह महसूस हुआ जैसे मैं अंदर से तबदील हो चुका हूँ। अब मैं एक नया इरादा लेकर आया हूँ कि पहले से बढ़कर अच्छाई की तरफ़ क़दम बढ़ाओंगा। उनके बेटे बयान करते हैं कि हुज़ूर अनवर का व्यक्तित्व ऐसा कशिश और नूर वाला थी कि मैं तो हुज़ूर अनवर के चेहरा मुबारक का दर्शन ही करता रहा। उनकी बेटी बयान करती हैं कि मेरी इच्छा थी कि हुज़ूर मुझे अँगूठी इनायत फ़रमाएं लेकिन मैंने ख़ुद कुछ कहा नहीं। जब हुज़ूर अनवर ने मुझ से पूछा कि मेरी शादी हो गई है तो मैंने निवेदन किया कि शादी हो चुकी है। इस पर हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए मुझे अँगूठी प्रदान फ़रमाई।

*एक औरत अपने बच्चों के साथ मुलाक़ात के लिए आई थीं कहती हैं कि हज़रत ख़लीफतुल मसीह अस्सालिस से मेरी 16 साल की उम्र में मुलाक़ात हुई थी। इस के बाद में आज ख़लीफतुल मसीह से मिली हूँ। मेरा ईमान ताज़ा हो गया है। हुज़ूर अनवर निहायत शफ़ीक़ रुहानी बाप हैं। मेरे शौहर की मृत्यु हो चुकी है।

इल्म में तरक्की की दुआ।

मेरे रब्ब मुझे ज्ञान में बढ़ा दे।

बीमारी से शिफा पाने की दुआ।

हे लोगों के रब्ब !बीमारी को दूर कर दे। शिफा प्रदान कर कि तू ही शिफा देने वाला है। तेरे अतिरिक्त कोई शिफा देने वाला नहीं इस प्रकार की शिफा प्रदान कर जो कोई बीमारी न छोड़े।

सफर की दुआ

अल्लाह के नाम के साथ उस का चलना और उस का ठहरना है निसन्देह मेरा रब्ब बहुत क्षमा करने वाला और बार बार क्षमा करने वाला है।

हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए मेरे सारी बच्चों से बारी बारी उनकी पढ़ाई के बारे में पूछा और निहायत मुहब्बत तथा दया के साथ उनसे बातें कीं।

मेरी बेटी फार्मेसी की शिक्षा प्राप्त कर रही है, इस ने हुज़ूर अनवर से पूछा कि क्या वह ऐसी दवाई प्रयोग कर सकती है जिसमें गाय का गोश्त प्रयोग हुआ हो जो इस्लामी तरीक़ के अनुसार हलाल नहीं की गई? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: मरीज़ बिलकुल ऐसी दवाई प्रयोग कर सकता है बल्कि पाकिस्तान में कई खांसी के सीरप मिलते हैं जिनमें अल्कोहल भी प्रयोग होती है। दरअसल बीमारी के ईलाज के तौर पर इस किस्म की दवाइयों का प्रयोग शरीयत ने जायज़ ठहराया है।

*एक दोस्त मुहम्मद रफ़ीक़ नून साहिब कई घंटों की दूरी तय करके अपने परिवार वालों के साथ मुलाक़ात के लिए आए थे। बयान करते हैं: आज हमने अपनी ज़िन्दगी में पहली बार ख़लीफतुल मसीह को बहुत क़रीब से देखा। हुज़ूर से मुसाफ़ा किया, बातें कीं। ख़ुशी से हमारी आँखों से आँसू जारी हैं। आज हम बहुत ख़ुशनसीब लोग हैं कि वक़्त के ख़लीफ़ा को अपनी आँखों से देखा है।

*ताहिर अहमद साहिब जिनका सम्बन्ध सैंटर्ल वर्जीनिया जमाअत से है अपनी फ़ैमिली के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की मुलाक़ात के लिए आए थे। अपने विचार बयान करते हुए कहते हैं कि जब हम मुलाक़ात के लिए हुज़ूर अनवर के दफ़्तर में दाख़िल हुए तो हुज़ूर अनवर का चेहरा मुबारक नूर से चमक रहा था। यूं लगता था कि जैसे अल्लाह तआला के फ़रिश्ते हुज़ूर के दाएं बाएं खड़े हूँ। महोदय की पत्नी ने बताया कि पिछले साल में पक्षघात रोगी हो गई थी और अपनी सेहतयाबी के लिए हुज़ूर अनवर को बाक़ायदगी से ख़त लिखती थी जिनका हुज़ूर अनवर की तरफ से निरन्तर जवाब भी प्राप्त होता था। अब ख़ुदा के फ़ज़ल से मैं हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की दुआ के नतीजा में मोजज़ाना तौर पर बहुत हद तक सेहत प्राप्त कर चुकी हूँ। मुलाक़ात के दौरान जब उनके बेटे ने हुज़ूर अनवर से अपनी माता की सेहतयाबी के लिए दुआ की दरख़ास्त की तो हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया उनको कुछ नहीं है और यह बिलकुल ठीक हो जाएँगी। महोदया ने इस पर कहा कि इस तरह हुज़ूर अनवर ने मुझे मेरी पूर्ण सेहत की ख़ुशख़बरी पहले ही दे दी है। मुझे दृढ़ यक़ीन है कि अब बीमारी के जो थोड़े बहुत चिन्ह बाक़ी रह गए थे, वह भी अब ख़त्म हो जाऐंगे। इंशाअल्लाह

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम 3 बजकर 40 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैयतुर्रहमान तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

(शेष.....)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad